अभ्युदय

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
परिपत्र

वर्ष - 13 अंक - 10 जनवरी 2014

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी विशेषांक

गुरु वाणी

- **संगठन का आधार-चरित्र बल** — संगठित युवा शक्ति समाज के नव-निर्माण में निर्णायक भूमिका निभा सकती है, पर ध्यान रहे कि प्रत्येक संगठन का मौलिक आधार चरित्र बल होता है। चरित्र बल के आधार के बिना प्रथम तो कोई संगठन खड़ा नहीं हो सकता और कदाचित खड़ा हो भी जाये तो वह जीवंत नहीं हो सकता। चरित्र से मेरा तात्पर्य अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की साधना का नाम चरित्र है। हालांकि इन तत्त्वों की संपूर्ण आराधना करना गृहस्थ के लिये संभाव्य और व्यवहार्य नहीं है, पर एक सीमा तक तो इनकी साधना हर कोई कर ही सकता है।
- नैतिकता, प्रामाणिकता, सदाचार, करुणा, मैत्री, संतोष, अनासक्ति आदि इन्हीं तत्त्वों के इर्द-गिर्द घूमने वाले मूल्य हैं। जो व्यक्ति इन मूल्यों को अपने जीवन का आदर्श बनाकर चलता है, वह चरित्रवान कहलाता है। चरित्र के संदर्भ में एक बात और कहना चाहता हूँ। हालांकि इसका मूलभूत सम्बन्ध व्यक्ति की अपनी आत्मा से है, वह स्वयं ही इसका विकास कर सकता है तथापि संपर्क भी इसके विकास में निमित्त और सहयोगी बनता है। चरित्रनिष्ठ व्यक्तियों का संसर्ग व्यक्ति की चारित्रिक गुणात्मकता विकसित करता है।

- **संगठन और नि:स्वार्थवृत्ति** — संगठन की दूसरी अपेक्षा है-नि:स्वार्थ वृत्ति। जिस संगठन के साथ जितने अधिक नि:स्वार्थी व्यक्ति जुड़ते हैं, वह संगठन अपने उद्देश्य में उतना ही अधिक सफल हो पाता है, उतनी ही अधिक अपनी मंजिल की दूरी तय कर पाता है। इसके विपरीत जो संगठन स्वार्थी लोगों से घिर जाता है, वह न केवल अपनी लक्ष्य प्राप्ति में विफल रहता है, अपितु अपने अस्तित्व के लिये भी खतरा पैदा कर लेता है।

- **संगठन की सफलता का आधार-एक नेतृत्व**

  अब प्रश्न हो सकता है कि संगठन का संचालन कैसे हो? इस विषय में मेरा स्पष्ट मत है कि संगठन का नेतृत्व एक व्यक्ति के सक्षम हाथों में होना चाहिये। जिस संगठन में सारे ही नेता बन जायें और अपनी-अपनी राग अलापने लगें, उस संगठन के भविष्य पर अंधकार का आधिपत्य हो जाता है। नीतिकार ने कहा है-

  यत्र सर्वेऽपि नेतार:, सर्वे पण्डितमानिन:।
  सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति, तद् राष्ट्रं विद्धि दु:खितम्।।

  और भी कहा गया है-

  नहि-पति बहु-पति निबल-पति, पति-कुमार पति-नार।
  और पुरन की का कहीं, सुरपुर होत उजार।।

  सर्वविदित है कि एक आचार्य के नेतृत्व की व्यवस्था ने तेरापंथ संघ के सर्वतोमुखी विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- **संघहित सर्वोपरि है** — संगठन की सफलता के लिये यह नितांत अपेक्षित है कि नियंता सामूहिक हित को सर्वोपरि महत्त्व दे। संगठन के हर छोटे-बड़े सदस्य को विकास का समान अवसर मिले। कोई भी सदस्य अपने आपको उपेक्षित न समझे। जहां संघहित की बात गौण करके नेता अपना व्यक्तिगत हित या स्वार्थ देखने लगता है, वहां संगठन तो कमजोर होता ही है, उसका स्वयं का नेतृत्व भी विवादास्पद बन जाता है, संगठन पर उसकी पकड़ भी ढीली पड़ जाती है।

गुरु वाणी

- नियंता के लिये यह आवश्यक है कि वह ऋजु हो, वक्र न हो। वक्रता अपने आप में एक बहुत बड़ा दुर्गुण है। इससे व्यक्ति का अपना अहित तो होता ही है, संगठन के विकास में भी एक बड़ा अवरोध पैदा हो जाता है। मैंने कई बार देखा है कि नेता की वक्रता के कारण किये-कराये कार्य पर सहसा पानी फिर जाता है। बिगड़ी आई सब चूक जाते हैं और फिर आश्चर्य की बात यह है कि वह कहता है- 'अरे! सारा बना बनाया काम कैसे बिगड़ गया!' सचमुच ऐसे व्यक्ति संघ को नेतृत्व देने के योग्य नहीं होते। किसी तरह वे नेता बन भी जाते हैं तो क्या, संगठन अच्छे ढंग से नहीं चला सकते।

- **अहं विसर्जन जरूरी है** — जहां स्वयं के स्थान पर दूसरे को महत्त्व देने की वृत्ति होती है, वहां संगठन मजबूत रहता है, एकसूत्रता बनी रहती है। इसके विपरीत जहां स्वयं को अधिक महत्त्व देने की मनोवृत्ति होती है, "मैं बड़ा हूँ", यह भावना जन्म लेती है, वहां संगठन में छेद हुए बिना नहीं रहता, फूट पड़े बिना नहीं रहती। क्यों? यह इसलिये कि जहां यह अहंवृत्ति प्रभावी होती है, वहां औचित्य अथवा न्याय गौण हो जाता है और स्वयं के अहं पोषण की बात प्रमुख। इसके लिये अनुचित से अनुचित साधन काम में लेने में कोई संकोच और परहेज नहीं रहता। इसकी परिणति यह होती है कि दूसरों में असंतोष पैदा हो जाता है। फलतः संगठन अव्यवस्थित हो जाता है, छिन्न-भिन्न हो जाता है।

- **मूल्यवान है बुजुर्गों का अनुभव** — प्रायः देखा जाता है कि युवक दिमाग और बुजुर्ग दिमाग दोनों आपस में मिलते नहीं हैं। बुजुर्गों का दिमाग धीमी गति से आगे बढ़ना चाहता है। उनकी शारीरिक शक्ति क्षीण होती है, इसलिये ऐसा अस्वाभाविक भी नहीं है। इसके साथ ही जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव भी उन्हें अपनी गति धीमी रखने के लिये संकेत करते हैं। इसके विपरीत युवकों का खून नया, गर्म होता है। उनका दिमाग तीव्र गति से आगे बढ़ना चाहता है पर अनुभवों की कमी के कारण वे जगह-जगह स्खलित हो जाते हैं।

- अतः युवकों का काम है कि वे आगे बढ़ने के उत्साह के साथ बुजुर्गों के अनुभव को जोड़ दें। इस तरह अनुभव के साथ गति करने से स्खलना की संभावना बहुत कम रह जाती है और गति की निरंतरता बनाये रखने के लिये यह बहुत आवश्यक है। अनुभव जोड़ने का अर्थ है बुजुर्गों को अपने कार्यों के साथ जोड़ना। इससे बुजुर्गों और युवकों के बीच की खाई स्वयं पट जायेगी। मैं युवकों और बुजुर्गों के परस्पर सहयोग को बहुधा अंधे और पंगु का सा सहयोग कहता हूँ। अंधा देख नहीं सकता और पंगु चल नहीं सकता, किंतु अंधा यदि अपने कंधों पर पंगु को बिठा ले तो दोनों की गाड़ी ठीक ढंग से चल सकती है। पंगु स्वयं बैठे नहीं, पर अंधा स्वयं अपने कंधे पर उसे बिठा ले, तब भी काम चल सकता है। अतः पुनः इस बात पर बल देना चाहता हूँ कि युवक बुजुर्गों की उपेक्षा नहीं, अपितु उनकी अनुभव संपदा का समुचित उपयोग करें और अपना मार्ग पथ प्रशस्त बनायें।

— आचार्य तुलसी

- प्रगति का पहला चरण है संकल्प और दूसरा चरण है प्रयत्न। आदतें मनुष्य में सर्वाधिक विकसित होती हैं। जब तक समन्वय का दृष्टिकोण विकसित नहीं होता तब तक आदत को बदला नहीं जा सकता। छोड़ना, लेना और उपेक्षा करना- इन तीनों के योग का नाम है समन्वय। अगर मनुष्य के व्यवहार में ये तीनों बातें नहीं हैं तो वह शांतिपूर्ण जीवन नहीं जी सकता। यदि हम पुरानी आदत को छोड़ना नहीं जानते, नई आदत का निर्माण करना नहीं जानते और कुछ बातों की उपेक्षा करना नहीं जानते तो उलझनों और कठिनाइयों से बचा नहीं जा सकता।

— आचार्य महाप्रज्ञ

- समय का नियोजन कहाँ और किन कार्यों में करना है, इसका विवेक आवश्यक है। अनुपयोगी कार्यों में समय नहीं लगाना चाहिए। उपयोगी कार्यों में समय का नियोजन व्यक्ति के लिए विकास का हेतु बन सकता है. आदमी का समय किसी को कष्ट देने में न लगे। हो सके तो किसी के कल्याण का प्रयास करना चाहिए। प्रभु-स्तुति, ध्यान, स्वाध्याय, सेवा आदि कार्यों में नियोजित होकर समय को सार्थक किया जा सकता है।

— आचार्य महाश्रमण

संयोजकीय

- तेरापंथ धर्मसंघ का ऐतिहासिक क्षेत्र मेवाड़, जहां का अद्भुत क्षेत्र आमेट तारीख 16 जनवरी 2012 का मंगल प्रभात, मेरे जीवन का स्वर्णिम प्रभात, आस्था के केन्द्र, तेरापंथ धर्मसंघ के नायक की शुभदृष्टि, वात्सल्य का साक्षात् दिग्दर्शन, शक्ति स्नात, सूर्य सम प्रखर तेजस्वी, चांद सम सौम्य, मेधा सम्पन्न, कृपा का अनुपम प्रसाद, पुण्यशाली हाथों से लिखा संदेश

  ''जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के भावी अध्यक्ष पद के लिये श्री हीरालाल मालू (सुजानगढ़-बैंगलोर) का नाम उपयुक्त प्रतीत हो रहा है।'' आचार्य महाश्रमण, सिरोला, 10 जनवरी 2012

  महासभा के दायित्व ग्रहण का हस्तांतरण प्रभो के पवित्र हाथों से मेरे हाथों में निशान हो गया, कृत्य-कृत्य हो गया। आशीर्वाद से लबालब दायित्व सौंप को प्राप्त कर, गुरु का वात्सल्य प्राप्त कर मैंने मेरे भाग्य की सराहना की।

- सरी (राजस्थान) में मेरे कार्यकाल की प्रथम कार्यकारिणी की बैठक, धर्मसंघ में निर्णित निर्णयानुसार आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का संयोजकीय दायित्व, गुरु कृपा से सभी सदस्यों द्वारा दिया गया। मन में भयंकर हलचल, चिंतन में कहीं विराम नहीं, कैसे होगा, कैसे मैं मेरे प्रभोश्री के इस चिंतन को कार्यरूप में परिणित कर पाऊंगा? सोचते-सोचते विश्राम, उत्साह की नव किरण, शुभ भविष्य की सुनहरी कल्पना, क्योंकि गुरु की प्रेरणा, प्रोत्साहन व आशीर्वाद हर पल मेरे साथ।

- तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में नवीन चिंतन, प्रतिमाह की 28 तारीख को प्रकल्प परिषद् व 29 तारीख को कल्याण परिषद् की बैठकें आवश्यकता के कारण स्थायित्व में निर्धारित। मैं आज अपने को गौरवान्वित हूं कि उपरोक्त तारीख 2 मार्च 2012 से प्रारम्भ बैठक से 28 जनवरी 2014 को गंगाशहर की बैठक की सम्पन्नता तक प्रभोश्री के श्रीचरणों में बैठने का सुअवसर, अपनी प्रस्तुति व सीखने का अनुपम अवसर गंगाशहर तक सम्पन्न। मुझे प्राप्त हुआ 23 बैठकों में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की परियोजनाओं का गहन चिंतन-मनन के साथ निर्धारण। प्रत्येक परियोजना के निर्धारण के साथ मुझे क्रियान्वयन का दायित्व। जहां गुरु कृपा होती है वह कार्य सुगम हो जाता है वही हुआ, निर्धारित परियोजना के क्रियान्वयन की दिशा में समाज के सतत् सहयोग से कदम अनवरत गतिमान रहे, उसी का साक्षात् परिणाम की निर्धारित परियोजनाएं लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में गतिशील है।

- 2 वर्ष के कार्यकाल का संक्षिप्त इतिहास, जो महासभा व आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का अमिट हस्ताक्षर बन गया है। वास्तव में दुनिया में वह इंसान बहुत ही भाग्यशाली होता है जिसे अपने लक्ष्य के बारे में जानकारी होती है। जिस इंसान के पास कोई लक्ष्य होता है वह भीड़ में अलग ही नजर आता है क्योंकि उसके कार्यों में सकारात्मकता होती है व उसके कार्यों से उसके लक्ष्य का स्पष्ट दिग्दर्शन होता है।

संयोजकीय

लक्ष्य बनाते तो उसके अंदर ताकत आ जाती है और वह अपने लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में अपने कदमों को अनवरत गतिशील बनाता है व उस इंसान को सही खुशी तभी प्राप्त होती है जब वह किसी स्वप्न को साकार रूप प्रदान करता है। लक्ष्य को प्राप्त करने के दौरान कई बार इंसान लड़खड़ाता है तो कई बार निराश भी हो जाता है, मगर मेरी स्पष्ट मान्यता है, मेरे जीवन का अनुभव है कि जो इंसान मुश्किलों से हार मान लेता है वह लक्ष्य पूरा करने से वंचित रह जाता है इसके विपरीत जो इंसान परेशानियों में भी साहस के कार्य करता है उसे सफलता प्राप्त होती है व सफलता प्राप्त करने से उसे आत्मविश्वास मिलता है इसकी बदौलत वह नया लक्ष्य निर्धारित करता है।

- जब-जब मेरे अंदर निराशा के भाव प्रस्फुटित होने लगे तब-तब मेरे भाग्य विधाता ने मुझे आशीर्वाद प्रदान कर मेरे अंदर भावनात्मक रूप से कार्य करने की क्षमता प्रदान की व एक बार श्रीमुख से शिक्षा फरमाते हुए कहा कि गुरुदेव तुलसी जन्म शताब्दी के तुम संयोजक हो, गुरुदेव तुलसी को अपने जीवन में कितने बाहरी व आंतरिक संघर्ष झेलने पड़े। तुम उनकी जन्म शताब्दी का कार्य कर रहे हो इसलिए निराशा के भाव नहीं आने चाहिये।

  गुरुदेव ने फरमाया कि

  "1. आत्म-बल मजबूत रहना चाहिये।

  2. न्यायपूर्ण और उचित कार्य करने में भय नहीं होना चाहिये।"

- मैंने 2 वर्षों के कार्यकाल में लगभग पूरे देश की यात्राएँ की। छोटे-छोटे गांवों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। ऐसी जगहें, ऐसे क्षेत्र जहां पर एक बार भी महासभा के सौ वर्षों के इतिहास में अध्यक्ष का जाना नहीं हुआ वहां गुरु कृपा से जाने का सौभाग्य मिला। अपनी यात्राओं के दौरान, अपने कार्यकाल के दौरान समाज के प्रत्येक वर्ग का जो मुझे आत्मीय स्नेह, सम्मान, सत्कार प्राप्त हुआ, बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ उससे मैं आज अत्यधिक भाव विभोर हूं।

- तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली परम्परा के संवाहक महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन चरणों में कृतज्ञता के स्वर मुखरित करते हुये नतमस्तक हूँ व जो अपार श्रद्धा के अंतर्निहित भावों का विनीत आपके चरणारविन्दों में समर्पित करता हूँ जिन्होंने मेरे जैसे साधारण व्यक्ति को तेरापंथ धर्मसंघ का प्रधान व्यक्ति बनाया। क्षमा, मैत्री, करुणा जैसे योग सुलभ गुणों के साक्षात् प्रतीक मुनि श्रेष्ठ आचार्यप्रवर ने अपने पवित्र नयनों से वात्सल्य प्रदान किया, साधना संपृक्त जीवन, ज्ञान व कर्म की मंदाकिनी के अनुपम संगम धर्मसंघ के सजग प्रहरी गुरुदेव ने मुझे प्रतिपल आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया। मैं आपके दीर्घ आयुष्य, निरामय, स्वस्थ जीवन की कामना करते हुये शुभकामना करता हूँ कि आपके सान्निध्य में आध्यात्मिकता का रथ प्रतिपल गतिमान रहे, आपका दर्शन विश्व मानव की निष्ठा बने, नैतिकता की निष्ठा के दीपक पर आचरण का ऐसा दीप जले जो रोशनी की सीमा छोड़कर मानव के भूमण्डल की जिन्दगी को उजाला प्रदान करे।

- मैं संघ महानिर्देशिका महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा जी, मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी व धर्मसंघ के समस्त चारित्रआत्माओं के प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करता हूँ जिनका मेरे दायित्व निर्वहन में आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के समायोजनीय विभिन्न परियोजनाओं के प्रायोजकगण, संरक्षक समिति, परामर्शक, कार्यसमिति, स्वागत समिति के सदस्यगण, संयोजकगण जन्म शताब्दी वर्ष में विशेष सहयोग प्रदान करने वाले सभी श्रावक-श्राविका के प्रति अंतर्मन से आभार प्रकट करता हूँ। केन्द्रीय संस्थाओं एवं समस्त तेरापंथी सभाओं के पदाधिकारियों के प्रति भी आभारी हूँ जिनका प्रतिपल सहयोग मुझे अपने दायित्व निर्वहन में प्राप्त हुआ।

  मेरे द्वारा किसी भी भूल के लिये सभी से खमत खामणा कर सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ...

- हीरालाल मालू

मुख्य संयोजक, आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

संपादकीय

- हमारा सौभाग्य है कि भारत की जिस माटी में हम पल रहे हैं उसमें वो गजब की उर्वरा शक्ति है जो गांधी, तुलसी, विनोबा जैसे रत्नों को जन्म देती है, जो समाज की नब्ज पहचानते हैं, उसकी धड़कन के उतार चढ़ाव को महसूस करते हैं और युग की धारा को मोड़ना जानते हैं। युग नायक तुलसी ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य इन पांच आचारों से सम्पन्न एक ऐसे संत थे जिनकी अविभक्त संत चेतना ने धर्म को कभी राष्ट्र हित से अलग नहीं माना। बुराई का प्रतिकार और अच्छाई का रास्ता धर्म का काम है, उनकी इस विचारधारा ने धर्म को व्यापक रूप प्रदान किया।

- उन करुणानुकम्पी महान् संतों ने महावीर की कल्याणी वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का स्वप्न ही नहीं देखा अपितु नैतिक मूल्यों के ह्रास से सहमी मानवता के अस्तित्व की रक्षा हेतु, उनके प्रति शिव कल्याण की परिकल्पना को साकार रूप देने हेतु एक-एक लम्हा तपस्या का जीवन जीया।

- कितनी ऊंची सोच थी उनकी? अणुव्रत के माध्यम से उन्होंने धार्मिकता, मैत्रीभावना, विश्व शांति और निःशस्त्रीकरण का संदेश दिया जिसकी उपयोगिता आज के इस आतंकवाद के माहौल में स्वयं सिद्ध है। उनके अहिंसा सार्वभौम के सिद्धांत और उसके प्रशिक्षण पर विश्व की सुख शांति की व्यापक संभावनाएं प्रखरता के साथ उभर रही हैं। देश ने अनेकों अलंकरणों से उन्हें नवाजा परंतु वे पुण्यदृष्टा मन को सुमन, देश को चमन बनाने की राह पर अटूट संकल्प के साथ बढ़ते रहे, चलते रहे और यही कारण है कि उन्हें हर वर्ग के आदमी ने अपने हृदय में बड़ी श्रद्धा से स्थान दिया।

- आज हम भारतीय उपभोग सामग्री पर ही नहीं विचारों पर भी विदेशी मार्का देखने के आदी हो रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता की यह घुसपैठ कब तक बर्दाश्त करेंगे हम? क्या होगा हमारी भारतीय संस्कृति व सभ्यता का? जीवनभर ही 'प्रकाश ज्योति' आचार्य तुलसी तड़प उठे। उनकी सृजन शक्ति ने भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों को कायम रखने व नये मानव के निर्माण के लिये अणुव्रत प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान का क्रियागामी सूत्र जनता के सामने रखा जिसके आधार पर नये युग के निर्माण की प्रक्रिया को व्यावहारिक बनाया जा सकता है। उस नये युग में सिर्फ और सिर्फ मनुष्यता के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन होगा न कि जाति, संपदा व शक्ति के आधार पर। इस त्रिपुटी ने विश्व चेतना को तन-मन दोनों का सद् स्वास्थ्य प्रदान किया है। **नकारात्मक सोच से विकलांग होती जा रही मानसिकता को, सकारात्मक सोच के बिंदु में छिपे इस सफलता के सिंधु का बेसब्री से इंतजार है।**

- बंधुओं, आज पूरा देश 'महाप्राण गुरुदेव' की असीम शक्ति से अपने प्राणों में नव ऊर्जा भर रहा है। नैतिकता की आवश्यकता हर देश काल और परिस्थिति में रही है और रहेगी। नैतिकता के मसीहा का जन्म शताब्दी वर्ष द्वितीय चरण मनाकर उनके सपनों का यथार्थ बनकर उभरे ऐसी मंगल कामना है। 'अभ्युदय' का यह अंक आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष को समर्पित है। जिसकी एक-एक जानकारी पाठक समुदाय को आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की भव्यता से परिचित करायेगी एवं इसे सफल बनाने में सम्यक् सोच नियोजन की दिशा भी जगायेगी, ऐसा विश्वास है। इस अंक के संकलन में श्री रोशनलाल भानु आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के संयोजक एवं श्री सुरेन्द्र कुमार मूथा का विशेष श्रम नियोजित हुआ है।

ज्योतिर्मय संत आचार्य तुलसी के प्रति अकम्पित आस्था के पुष्प समर्पित करते हुए
अभयंकर विकास की अनन्त मंगलकामनाओं के साथ...

वीणा बैद

• आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष

श्रद्धार्पण – कर्तृत्व के दर्पण में

• आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का हार्द – 'व्यक्तित्व निर्माण'

- 'यह वर्ष मुख्यत: व्यक्तित्व निर्माण एवं शिक्षण प्रशिक्षण के लिये समर्पित रहे' – आचार्य महाप्रज्ञ

  27 दिसम्बर 2009, श्रीडूँगरगढ़। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में तेरापंथी महासभा द्वारा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के संदर्भ में महत्वपूर्ण विचार संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी में समाज के वरिष्ठ एवं चिंतनशील व्यक्तियों ने भाग लिया। गोष्ठी में अनेक व्यक्तियों ने सुझाव दिए। संगोष्ठी में आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व साध्वीप्रमुखाजी का दिशा निर्देशन प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर ने जन्म शताब्दी वर्ष को 'व्यक्तित्व निर्माण वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की एवं फरमाया कि आचार्य तुलसी समस्याओं का समाधान करने वाले महापुरुष थे, इसलिए उनकी जन्म शताब्दी को भी वर्तमान संदर्भ में मनाया जाना चाहिये। आचार्यप्रवर ने इस वर्ष के लिए व्यवस्थित कार्य योजना के साथ शक्ति के नियोजन की अपेक्षा की।

- **इस वर्ष को परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के द्वारा 'व्यक्तित्व निर्माण वर्ष' के रूप में निर्धारित किया गया। व्यक्तित्वों का निर्माण बहुत आवश्यक है। आचार्य तुलसी ने कितने-कितने व्यक्तित्वों का निर्माण किया था। वे निर्माता पुरुष थे इसलिए उनके जन्म शताब्दी वर्ष को व्यक्तित्व निर्माण वर्ष के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। हमने चिंतन किया था कि गुरुदेव के शताब्दी वर्ष में महाव्रती व्यक्तियों का निर्माण हो। इसके लिए सौ मुनि दीक्षाओं का लक्ष्य निर्धारित किया। उस दिशा में प्रयास भी चल रहा है। इसके साथ हमने दूसरा मुख्य कार्यक्रम हाथ में लिया है, अणुव्रत के प्रचार-प्रसार का, लोगों को अणुव्रती बनाने का।** – आचार्य महाश्रमण

• व्यक्तित्व निर्माण प्रकल्प परिषद् का गठन

परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा महाप्रयाण से कुछ दिनों पूर्व 16 अप्रैल 2010 को मोमासर में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की कार्य योजनाओं के निर्माण हेतु चिंतन आदि के लिए साधु-साध्वियों की "व्यक्तित्व निर्माण प्रकल्प परिषद्" का गठन किया गया। उनके सान्निध्य में इस परिषद् की कतिपय संगोष्ठियां भी हुईं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के पश्चात् आचार्य श्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में, महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया की उपस्थिति में इस परिषद् की अनेकानेक संगोष्ठियां हुईं, जिनमें इस शताब्दी वर्ष में करणीय कार्य योजना, कार्यविधि आदि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। पिछले लगभग डेढ़ वर्ष से प्रतिमाह की 28 तारीख इस संगोष्ठी के लिए प्राय: निर्धारित रहती है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति और तेरापंथी महासभा से जुड़े अनेक कार्यकर्ता इन संगोष्ठियों में प्राय: उपस्थित रहते हैं।

- परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सान्निध्य यात्राओं के दौरान, चाहे छोटा कस्बा हो चाहे शहर, चाहे बीदासर का महोत्सव (दीक्षा महोत्सव) का कार्यक्रम हो, सर्दी, गर्मी, वर्षा के मौसम में भी व्यक्तित्व निर्माण प्रकल्प परिषद् की श्री हीरालाल मालू के संयोजकीय दायित्व प्रारम्भ होने के साथ 3 मार्च 2012 को कानाणा राजस्थान में प्रारम्भ हुई व **28 फरवरी 2014 को गंगाशहर में 23वीं बैठक** सम्पन्न हो रही है। प्रकल्प परिषद् की समस्त बैठकों में संयोजक श्री हीरालाल मालू जिसे परम श्रद्धेय आचार्य महाश्रमणजी ने मुख्य संयोजक के रूप में उद्घोषित किया उन्हें परियोजनाओं की प्रस्तुति व गुरुदेव से क्रियान्वयन का निर्देश प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

3 मार्च, 2012	कानाणा	28 मार्च, 2013	[illegible]
17 मार्च, 2012	[illegible]	28 अप्रैल, 2013	फतेहपुर
18 मार्च, 2012	मारवाड़ जंक्शन	28 मई, 2013	[illegible]
19 मार्च, 2012	[illegible]	16 जुलाई, 2013	[illegible]
30 जून, 2012	कंटालिया	28 जुलाई, 2013	लाडनूं
16 जुलाई, 2012	जसोल	28 अगस्त, 2013	लाडनूं
31 जुलाई, 2012	जसोल	28 सितम्बर, 2013	लाडनूं
28 सितम्बर, 2012	जसोल	28 अक्टूबर, 2013	लाडनूं
28 अक्टूबर, 2012	जसोल	28 नवम्बर, 2013	बीदासर

28 नवम्बर, 2012	जसोल	28 दिसम्बर, 2013	बीदासर
28 दिसम्बर 2012	बाड़मेर	28 जनवरी, 2014	गंगाशहर
28 जनवरी 2013	जसाला		

* **कार्य निष्पादन**
* **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति का गठन**

शताब्दी वर्ष के संदर्भ में हुई प्रबन्ध परिषद् की इससे पूर्व की संगोष्ठियों में लिए गए निर्णय के अनुसार शताब्दी वर्ष से सम्बन्धित सभी कार्यों के निष्पादन हेतु 'आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति' का गठन हुआ। महासभा के पदेन अध्यक्ष समिति के संयोजक होंगे, ऐसा निर्णय हुआ। **इसके तहत वर्तमान में समिति के संयोजक श्री हीरालाल मालू हैं। 28 अगस्त 2013 को हुई मीटिंग में समिति के संयोजक को मुख्य संयोजक के रूप में अभिहित किया गया।**

* **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी : कार्य प्रगति – चार चरण + महाचरण का महाउद्घोष**

परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण ने सरदारशहर में दीक्षा स्थापना दिवस (25 जुलाई 2010) के दिन आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष को 'व्यक्तित्व निर्माण वर्ष' के रूप में समायोजित करने की घोषणा की। इस अवसर पर परमपूज्यश्री ने शताब्दी वर्ष के चार चरण उद्घोषित किए। कालान्तर में क्रमशः सन 2013 और 2014 के चातुर्मास क्रमशः लाडनूं और दिल्ली में करने की घोषणा हुई तो चार चरण और उनके स्थान इस प्रकार निर्धारित हुए -

प्रथम चरण	वि. सं. 2070	कार्तिक शुक्ला द्वितीया	5 नवम्बर 2013	लाडनूं
द्वितीय चरण	वि. सं. 2070	माघ शुक्ला पंचमी	5 फरवरी 2014	गंगाशहर
तृतीय चरण	वि. सं. 2071	भाद्रपद शुक्ला नवमी	3 सितम्बर 2014	दिल्ली
चतुर्थ चरण	वि. सं. 2071	कार्तिक शुक्ला द्वितीया	25 अक्टूबर 2014	दिल्ली

* **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी : चार चरणों के साप्ताहिक कार्यक्रम**

व्यक्तित्व निर्माण प्रबन्ध परिषद् की संगोष्ठी में चिंतन के पश्चात आचार्यप्रवर ने प्रत्येक चरण के कार्यक्रम को साप्ताहिक रूप में समायोजित करने का निर्णय किया। चार चरणों के साप्ताहिक कार्यक्रम और उनके निर्धारित विषय इस प्रकार हैं -

* **प्रथम चरण (साप्ताहिक कार्यक्रम), लाडनूं**

5 नवम्बर 2013	आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : शुभारंभ समारोह
6 नवम्बर 2013	आचार्य तुलसी : व्यक्तित्व साधना
7 नवम्बर 2013	आचार्य तुलसी : ज्ञान विज्ञान
8 नवम्बर 2013	आचार्य तुलसी : प्रबंधन कौशल
9 नवम्बर 2013	आचार्य तुलसी : सुदीर्घ यात्राएँ
10 नवम्बर 2013	आचार्य तुलसी : निर्माण कौशल
11 नवम्बर 2013	आचार्य तुलसी : जीवन मीमांसा

* **द्वितीय चरण (साप्ताहिक कार्यक्रम), गंगाशहर**

30 जनवरी 2014	आचार्य तुलसी और आगम संपादन
31 जनवरी 2014	आचार्य तुलसी और शिष्य संपदा
1 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी और जैन विश्वभारती
2 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी और संघीय संस्थाएं
3 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी और शैक्षणिक क्रांति
4 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी और अभिनव उन्मेष
5 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी द्वितीय चरण : मुख्य समारोह

- **तृतीय चरण (साप्ताहिक कार्यक्रम), दिल्ली**

3 सितम्बर 2014	आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी : तृतीय चरण, मुख्य समारोह
4 सितम्बर 2014	नैतिकता के प्रतिष्ठापक - आचार्य तुलसी
5 सितम्बर 2014	अध्यात्म के पथदर्शक - आचार्य तुलसी
6 सितम्बर 2014	मूल्यात्मक शिक्षा के उन्नायक - आचार्य तुलसी
7 सितम्बर 2014	साम्प्रदायिक सौहार्द के पुरोधा - आचार्य तुलसी
8 सितम्बर 2014	नारी कल्याण के संदेशवाहक - आचार्य तुलसी
9 सितम्बर 2014	राष्ट्रीय समस्याओं के समाधायक - आचार्य तुलसी

- **चतुर्थ चरण (साप्ताहिक कार्यक्रम), दिल्ली**

19 अक्टूबर 2014	विश्वशान्ति और अणुव्रत
20 अक्टूबर 2014	पर्यावरण और अणुव्रत
21 अक्टूबर 2014	राजनीति और अणुव्रत
22 अक्टूबर 2014	व्यवसायशुद्धि और अणुव्रत
23 अक्टूबर 2014	मानवीय मूल्य और अणुव्रत
24 अक्टूबर 2014	नैतिकता और अणुव्रत
25 अक्टूबर 2014	आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समापन समारोह

- **महाचरण – 28 नवम्बर 2013, बीदासर**

दिनांक 28 नवम्बर 2013 को एकादशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मघवागणिराज की तपोभूमि बीदासर का गौरव बढ़ाते हुए बीदासर में समायोजित "**बृहद् दीक्षा महोत्सव**" को आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के "**महाचरण**" का सम्मान देकर उसे स्वर्णिम अक्षरों में तेरापंथ के इतिहास में महत्त्वपूर्ण रूप में अंकित कर दिया। **उन्हीं के शब्दों में... इस बार हम आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष में यहां आए हैं। इस वर्ष के उपलक्ष्य में सौ मुनि दीक्षाओं की कल्पना हमने कर रखी है। महाव्रती बनाने के क्रम में हमने बीदासर को मुख्य रूप से चुना। इस वर्ष के आयोजन हेतु चार चरण पूर्व में हमने निर्धारित कर दिए। आज मैं आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी का 'महाचरण' बीदासर को दे रहा हूं। इन चार चरणों के ऊपर महाचरण रहेगा, क्योंकि प्रायोगिक आयोजन तो यहां हो रहा है। अन्य चार चरणों में तो स्तुति आदि का उपक्रम है, किन्तु यह तो प्रायोगिक आयोजन है। इसलिए बृहद् दीक्षा समारोह आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के 'महाचरण' के रूप में रहेगा। – आचार्य महाश्रमण**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का महाचरण बृहद् दीक्षा महोत्सव

- गुरुकुलवास के अतिरिक्त भी चार चरणों के साप्ताहिक कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथी सभा द्वारा व्यवस्थित और गरिमापूर्ण रूप में समायोजित हों, ऐसा प्रयास वांछनीय है।

लक्ष्य निश्चित हो, पांव गतिशील हो, तो मंजिल कभी दूर नहीं होती।

- **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति का स्वरूप**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के विराट आयोजन हेतु आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति का गठन किया गया है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष इस समिति के पदेन मुख्य संयोजक रहेंगे। इस समिति के अन्तर्गत संरक्षक समिति, परामर्शक समिति, कार्यसमिति और स्वागत समिति नामक चार समितियां गठित की गई हैं। संरक्षक समिति में विशिष्ट धर्मगुरुओं, राजनेताओं, बौद्धिकों आदि विशिष्ट महानुभावों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। अनेक महानुभावों की इस हेतु स्वीकृति भी प्राप्त हो चुकी है। परामर्शक समिति में तेरापंथ समाज और अन्य जैन समाज के अनुभवी व चिंतनशील व्यक्तियों को जोड़ा गया है। कार्यसमिति में केन्द्रीय संस्थाओं के अध्यक्ष, लाडनूं, दिल्ली और गंगाशहर की प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष तथा तेरापंथ समाज के अनेक कार्यकर्ता सम्मिलित किए गए हैं। निर्धारित अनुदान राशि प्रदान करने वाले महानुभाव स्वागत समिति के सदस्य हैं।

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के समायोजन हेतु प्राप्त अनुदान राशि के संपूर्ण आय-व्यय का विवरण तेरापंथी महासभा द्वारा रखा जाना निर्धारित है। बजट आदि के निर्धारण हेतु महासभा के पांच पदाधिकारियों (अध्यक्ष, मुख्य न्यासी, निवर्तमान अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष) की आर्थिक नियोजन समिति भी गठित है। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष में विभिन्न करणीय कार्यों हेतु पृथक-पृथक संयोजक मनोनीत किए गए हैं।

- **आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर**

आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा अपने गुरु के विराट व्यक्तित्व को समर्पित...

सादर विनयाञ्जलि...

आचार्य श्री महाश्रमणजी के शताब्दी संदेश के रूप में संघ की अमूल्य निधि बन गयी

- ईसा की बीसवीं सदी में भारत में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया, उनमें एक हैं आचार्य तुलसी। उन्होंने जीवन के ग्यारहवें वर्ष में परमपूज्य कालूगणी के पास मुनित्व स्वीकार किया। उन्होंने अपनी प्रतिभा और साधना के आधार पर परमपूज्य कालूगणी के हृदय में अपना स्थान बनाया और पूज्य कालूगणी ने उन्हें अपने हृदय में बसाया, ऐसा हमारा अनुमान है। वे छोटी अवस्था में एक उभरते मुनि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। वे छोटी अवस्था में ही शिक्षक बन गए और लंबे काल तक शिक्षक बने रहे।
- बाईस वर्ष की अवस्था में वे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशास्ता बन गए। तेरापंथ के नवम आचार्य के रूप में उन्होंने अपना शासनकाल प्रारंभ किया। बाईस वर्ष जैसी छोटी अवस्था में अपने सैकड़ों साधु-साध्वियों के विशाल समुदाय का एकछत्र आचार्य बनना तेरापंथ के लिए तो कीर्तिमान है ही, अन्य जैन सम्प्रदायों की दृष्टि से भी यह एक विशिष्ट घटना प्रतीत हो रही है। उन्होंने प्रलम्ब आचार्यकाल प्राप्त किया, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने जीवनकाल में एक साथ इकतीस मुनि दीक्षाएं दीं, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने आचार्यकाल में अपनी संसारपक्षीय मां को अपने मुखकमल से दीक्षित किया, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने एक साथ चौदह पुरुषों को मुनिदीक्षा प्रदान की, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उनके आचार्यकाल में दो आचार्यों की माताओं–परमपूज्य कालूगणी की संसारपक्षीया मां महासती छोगांजी और परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की संसारपक्षीया मां महासती वदनांजी का संथारा हुआ, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने सुदूर पूर्वांचल और दक्षिणांचल आदि क्षेत्रों की पदयात्रा की, यह भी तेरापंथ के आचार्यों के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने आचार्यकाल में धर्मसंघ में क्रमशः तीन साध्वीप्रमुखाओं की नियुक्ति की, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने दीक्षा-प्रदाता गुरु द्वारा दीक्षित शिष्य को अपना उत्तराधिकारी बनाया, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने आचार्यकाल में जितनी मुनि दीक्षाएं दीं, वह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने जीवनकाल में आचार्य पद का परित्याग कर अपने युवाचार्य को आचार्य बना दिया, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
- इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि आचार्य तुलसी एक कीर्तिमान पुरुष थे। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। उनके आचार्यकाल में प्रेक्षाध्यान पद्धति का आविर्भाव हुआ। शिक्षा जगत के लिए उनके शासनकाल में जीवनविज्ञान का उपक्रम प्रस्तुत हुआ। ये तीनों आयाम लोक-कल्याणकारी उपक्रम हैं। गुरुदेव के कार्यक्रमों को व्यापकता प्रदान करने वाले उन्मेष हैं।

- परमपूज्यश्री का एक महत्त्वपूर्ण अवदान है जैन आगमों का सम्पादन। उनके आचार्यकाल में उन्हीं के वाचनाप्रमुखत्व में जैन आगमों के सम्पादन का कार्य प्रारंभ हुआ। कार्य की निष्पत्ति कुछ अंशों में उन्होंने स्वयं देख भी ली थी। अनेक आगम सुसम्पादित होकर उनकी विद्यमानता में प्रकाशित हो गए। आगम अनुसंधान का कार्य तेरापंथ धर्मसंघ द्वारा वर्तमान में भी किया जा रहा है। अवशेष कार्य को निःशेष करने की दिशा में प्रयास चालू है।
- दीक्षा से पूर्व शिक्षा की आवश्यकता को गुरुदेव ने अनुभव किया। उसकी फलश्रुति है पारमार्थिक शिक्षण संस्था। उन्होंने समणश्रेणी का सूत्रपात किया। यह भी उनका साहसिक कदम था। इस श्रेणी ने प्रतिष्ठा प्राप्त करने के साथ अपनी उपयोगिता भी प्रमाणित की है।
- गुरुदेव के आचार्यकाल में जैन विश्वभारती संस्था प्रादुर्भूत हुई। आज यह संस्था मेरी दृष्टि में जैन समाज में स्वनामधन्य संस्था है। इसी संस्था की कुक्षि के रूप में जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट (मान्य विश्वविद्यालय) का जन्म हुआ, जिसे परमपूज्य गुरुदेव का वरदहस्त प्राप्त हुआ। वे इसके संवैधानिक रूप में अनुशास्ता बने। मेरी दृष्टि में प्रस्तुत मान्य विश्वविद्यालय जैन समाज के लिए बड़ी उपलब्धि है।
- गुरुदेव के आचार्यकाल में नारी-जागरण का अपूर्व कार्य हुआ। वह कार्य आज भी निष्पत्ति के रूप में समाज के सामने है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल उसका साक्ष्य है। युवकों के उत्थान के लिए गुरुदेव के आचार्यकाल में विशिष्ट उपक्रम उद्घाटित हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के रूप में उसका दर्शन किया जा सकता है।

  अणुव्रत आन्दोलन को गतिशील बनाए रखने के लिए अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्वभारती और अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास की स्थापना हुई। गुरुदेव की विद्यमानता में तेरापंथ विकास परिषद्, जय तुलसी फाउण्डेशन, प्रेक्षा विश्वभारती, अमृतवाणी जैसे उपक्रम विकसित हुए। तेरापंथी सभाओं की एक लम्बी शृंखला प्रस्तुत हो गई।
- एक महान् व्यक्तित्व की जन्मशताब्दी का 100वां वर्ष वि.सं. 2070, कार्तिक शुक्ला द्वितीया को प्रारंभ होने जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में शताब्दी समारोह की योजना बननी शुरू हो गई थी। वह योजना अब निर्णीत हो चुकी है। उसकी क्रियान्विति भी संचालन की प्रक्रिया में है। शताब्दी वर्ष को व्यक्तित्व-निर्माण वर्ष के रूप में घोषित किया गया है। व्यक्तित्व-निर्माण की दो मुख्य योजनाएं हैं-

  1- महाव्रत - 100 महाव्रती दीक्षाएं देना।
  2- अणुव्रत - अणुव्रती बनाना और अणुव्रत का प्रचार-प्रसार करना।
- **परमश्रद्धेय, परोपकारपरायण, परमदयालु, महान् अनुशास्ता, परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का जन्मशताब्दी वर्ष हम सबके लिए निःश्रेयस् का निमित्त बने। शुभाशंसा।** - आचार्य महाश्रमण

निर्माण करना कठिन है, ध्वंस तो कोई भी कर सकता है।

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष का अविस्मरणीय

'शताब्दी गीत'

रचनाकार - आचार्य महाश्रमण

सुगुरु को वंदन शत-शत बार।

तुलसी जन्म शताब्दी पाकर गर्व परम सुखकार।।
तेरापथ शासन को प्रभुवर ने दी अभिनव ऊंचाई।
दिया नया आकार प्रगति का चिंतन की गहराई।
लम्बी-लम्बी यात्राओं का खोला नव में द्वार।।1।।
जैन आगमों का सम्पादन नव इतिहास बनाया।
पावन पावन प्रेरणा का ना, सुखसागर लहराया।
एकनिष्ठा से भर आये ने जिन-वाणी भण्डार।।2।।
मुनि दीक्षा का शतक बने, यह ऊंचा लक्ष्य हमारा।
संघ-संपदा वर्धमान हो, पाकर नया उजारा।
संस्कारों के महासृजन का सपना हो साकार।।3।।
अमल अणुव्रत आन्दोलन अवदान बने वरदायी।
जनजीवन में बिम्बित हो मानवता की परछाईं।
नैतिकता की सुरसरिता से सरसायें संसार।।4।।
सुमन-माल पुरुषोत्तम प्रभु को श्रद्धासुमन चढ़ाएं।
शुभ भविष्य को सम्मुख रखकर आगे कदम बढ़ाएं।
'महाश्रमण' जीवन निर्माता तुलसी का उपकार।।5।।

लय :- यही है जीने का विज्ञान... ।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का - चिर अनुप्रेक्षणीय उद्घोष

शताब्दी घोष

'जन जन में जागे विश्वास - संयम से व्यक्तित्व विकास'

- हमारा मानना है कि व्यक्तित्व-निर्माण का एक महत्वपूर्ण घटक तत्त्व है संयम। इसलिए इसके अनुरूप ही हमने शताब्दी वर्ष का घोष भी चयनित किया है 'जन जन में जागे विश्वास ; संयम से व्यक्तित्व विकास'। हमारा यह विश्वास है कि संयम के द्वारा अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। - आचार्य महाश्रमण
- प्रत्येक सभा में इस घोष की ऑडियो सीडी प्रेषित की गयी है ताकि इस उद्घोष का अधिकाधिक उपयोग हो सके। इसके स्वर प्रसिद्ध पार्श्वगायक श्री रूप कुमार राठौड़ ने दिये हैं।

> महाश्रमण बहुत भला है, बहुत विनीत है।
> मैं कहता हूं कि " साधु हो तो ऐसा हो। "
>
> \- आचार्य तुलसी

- **प्रतीक चिन्ह : आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह हेतु एक प्रतीक चिन्ह का निर्माण किया गया है। आचार्य तुलसी के रेखाचित्र और उनके चित्र से युक्त इस प्रतीक चिन्ह में भारतीय संस्कृति में प्रातः वंदनीय 'तुलसी के पौधे' की तीन हरी पत्तियां ... के आकार में दर्शाई गई हैं। प्रतीक चिन्ह के नीचे की ओर एक रेखा के पश्चात आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह 2013-2014 अंकित है। जन्म शताब्दी से संबंधित पत्राचार सामग्री, प्रचार सामग्री आदि में इस प्रतीक चिन्ह का उपयोग किया जायेगा।

- यह लोगो **श्री अजय चोपड़ा, जयपुर** के कुशल निर्देशन में तैयार किया गया है।

- **आचार्य तुलसी 'लोगो' अनावृत किया गया...**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह 2013-14 का लोगो देखने में बड़ा सुंदर है और हरी पत्तियां मानो आँखों को शान्ति देने वाली हैं। मुझे आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति हो रही है। गुरुदेव ने अहिंसा यात्रा की थी उस 'लोगो' में भी पत्तियां थी इसमें भी हैं। गुरुदेव का फोटो, तुलसी का नाम, पत्तियां ये सभी बड़ा आकर्षक लग रहा है। इस 'लोगो' को शताब्दी वर्ष की स्मृति में अनावृत किया गया है, बड़े उल्लास के साथ इसे हम स्वीकार कर रहे हैं। - आचार्य महाश्रमण

- इसी क्रम में इस विशिष्ट 'लोगो' का महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा दिनांक 8 दिसम्बर 2012 को लोकार्पण कर राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी को श्रद्धा समर्पित की गयी।

- **निर्धारित परियोजनाओं का स्वरूप एवं प्रगति विवरण**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह की संयोजना हेतु व्यक्तित्व निर्माण प्रबन्ध परिषद् व अन्य चिंतन गोष्ठियों में विभिन्न स्तरों पर चिंतन-मंथन हुआ, तत्पश्चात इस संदर्भ में परियोजनायें निर्धारित हुई। जिनका संक्षिप्त विवरण उनकी गति-प्रगति के साथ इस प्रकार है -

- **कार्यक्रमों की संक्षिप्त व व्यवस्थित जानकारी हेतु 'फोल्डर' का निर्माण**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का यह आधारभूत पत्र है...

यह जो गुरुदेव तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में छोटा सा कार्यक्रम संबंधी जानकारी का 'फोल्डर' है वो महत्वपूर्ण है, शताब्दी वर्ष के संदर्भ में क्या-क्या करना है, उसकी संक्षेप में महत्वपूर्ण जानकारी इस छोटे से फोल्डर से प्राप्त की जा सकती है। बड़ा महत्वपूर्ण है या यों कहना चाहिये कि शताब्दी का यह आधारभूत पत्र है, जिससे जानकारी प्राप्त की जा सकती है व समुचित कार्यक्रम आगे बढ़ाये जा सकते हैं। - आचार्य महाश्रमण

- उल्लेख्य है कि आचार्य तुलसी के विराट व्यक्तित्व परिचय के साथ तैयार इस फोल्डर की 18,000 प्रतियां हिंदी एवं अंग्रेजी में तैयार की गयी हैं।

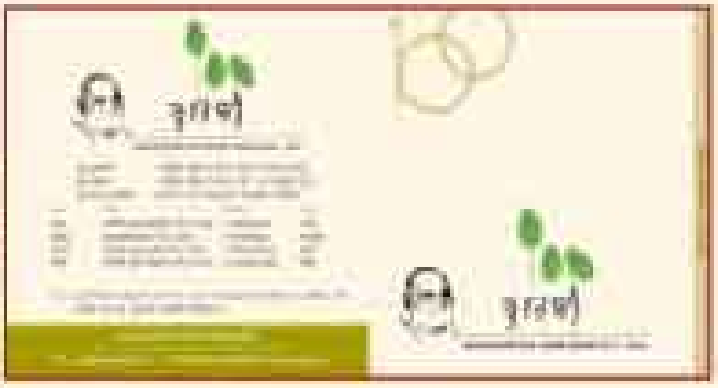

* **आचार्य महाश्रमण का महासंकल्प - मुनि दीक्षा का शतक बने**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के परिप्रेक्ष्य में आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा उद्घोषित अतिमहत्वपूर्ण कार्य है–सौ मुनि दीक्षाएं। इस सन्दर्भ में 28 अक्टूबर 2011 को केलवा चातुर्मासिक प्रवास में आचार्य तुलसी जन्मदिवस पर चरम उद्बोध आचार्यश्री ने सौ मुनि दीक्षाओं के साथ अणुव्रती बनाने के राष्ट्रव्यापी अभियान के बारे में दिशानिर्देश देते हुए कहा- 'जन्म शताब्दी वर्ष के संदर्भ में अनेक योजनाएं बन रही हैं। करणीय कार्यों की दृष्टि से दो बातें मेरे मस्तिष्क में काफी स्पष्ट हुई हैं। पहली बात–महाव्रती साधियों का विकास। इसमें चिंतन और प्रयास इस बात का हो कि गुरुदेव के जन्मशताब्दी वर्ष में सौ मुनि दीक्षाएं हो जाएं।

* इसमें अभी से सबको लग जाना है। मान लीजिए कि सौ में कुछ कमी रह जाती है तो अभी से जो दो वर्ष बचे हैं, तब इनमें हुई दीक्षाओं को भी उसमें जोड़ लेंगे। इस तरह इन दो वर्षों में होने वाली दीक्षाओं को जोड़कर भी अगर शताब्दी वर्ष में हम सौ का लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं तो यह शताब्दी वर्ष की एक बड़ी उपलब्धि होगी।
* गुरुवचन की इस प्रेरणा का व्यापक प्रभाव रहा व अब तक 92 दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं व 2 मुनि दीक्षाएं 2 फरवरी 2014 व 14 मई 2014 को घोषित हैं। जिसमें महावरण के रूप में आयोजित ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव '43' दीक्षाओं के साथ तेरापंथ ही नहीं अपितु पूरे जैन समाज के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो चुका है।

* **सशक्त प्रेरणा**
* **अणुव्रत कार्य को बल देने हेतु मार्गदर्शक बना - आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन**
* 14 मार्च 2010, श्रीडूंगरगढ़। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा - "जन्म शताब्दी वर्ष पर अणुव्रत व नैतिकता का स्वर इतना शक्तिशाली बने कि नैतिकता जनजीवन का प्रमुख अंग बन जाए। ऐसे शक्तिशाली वातावरण का निर्माण करना है जिससे कि भ्रष्टाचार और बुराई करने वालों को भी अपनी भूल का अहसास हो और उनका जीवन बदले।

* **जीवन बदले पर कैसे? तेरापंथ अनुशास्ता ने राह दिखाई**

"अणुव्रत को व्यक्तित्व विकास की मुख्य धारा के रूप में अपनाएं"

लोगों को अणुव्रती बनाने का प्रयत्न करें। अणुव्रत का जो कार्यक्रम आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में होना है हमने यह निर्णय किया था कि उसका प्रारम्भ 2012 में आने वाली कार्तिक शुक्ल द्वितीया को करना है अभी यह अणुव्रत की आचार संहिता का पत्र व फॉर्म जारी किया गया। गुरुदेव तुलसी को याद करके इस कार्यक्रम का लोकार्पण कर रहा हूँ। अणुव्रत के इस मंगल कार्यक्रम का और आज से जो अणुव्रती बने 11 नियम व आचार संहिता को स्वीकार करे, उनकी गिनती जन्म शताब्दी के संदर्भ में होनी चाहिए। कल तक जो बन गए वो अलग है।

* जो आज कार्तिक शुक्ला द्वितीया से 2014 तक अणुव्रती बने उनकी गणना जन्म शताब्दी समारोह में की जानी चाहिए।"

– आचार्य महाश्रमण

* **अणुव्रत अभियान सशक्तता के साथ हो गतिमान**

गुरु के इस दिशा-निर्देश को शिरोधार्य कर अणुव्रत अभियान को राष्ट्रव्यापी स्तर पर पूर्ण सावचेतता के साथ संचालित करते हुए पूरे देश से 1,00,000 अणुव्रती तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस हेतु विभिन्न उपक्रम निर्धारित किये गये जो इस प्रकार है -

* **अणुव्रत संकल्प पत्र** — अणुव्रत संकल्प पत्र भरवाने का शुभारम्भ 28 अक्टूबर 2012 को जसोल में आचार्य तुलसी के 99वें जन्म दिवस पर किया गया।
* मूल 11 नियमों से युक्त अणुव्रत संकल्प पत्र भरवाने का दायित्व विभिन्न केन्द्रीय संस्थाओं को दिया गया है जिसके तहत संस्थाओं व कार्यकर्ताओं का अनवरत श्रम कार्य निष्पादन में योगभूत बना है। ज्ञातव्य है कि अब तक 31,000 संकल्प पत्र प्राप्त हो चुके हैं और यह कार्य अणुव्रत संकल्प साधकों में द्रुतगति से बढ़ते हुए निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसित है। इसकी सार्थक अपेक्षा है।

- अगस्त 2013 से यह कार्य '**अणुव्रत महासमिति**' की देखरेख में संचालित हो रहा है एवं समिति द्वारा सभी '**अणुव्रत संकल्प धारकों**' को '**अनुमोदना पत्र**' जारी किया जा रहा है अतः अनुरोध है कि इस संदर्भ में संपूर्ण जानकारी हेतु अणुव्रत महासमिति से संपर्क करें व अपने संकल्प पत्र इस समिति को प्रेषित करें।
- अणुव्रत संकल्प पत्र कार्य योजना के संयोजक **श्री प्रकाश सुराणा, कोलकाता**, मोबाईल नं. 098311 25321 हैं।
- अणुव्रत महासमिति का पता – अणुव्रत भवन : 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 फोन : 011-23233345, 23239963, अणुव्रत महासमिति अध्यक्ष **श्री डालचन्द कोठारी**, मो. 09322229709, महामंत्री **श्री मर्यादा कुमार कोठारी**, मो: 09414134340, ईमेल : maryada37@gmail.com

- **अणुव्रत संगोष्ठियाँ**

आचार्य श्री तुलसी की मासिक जन्म तिथि शुक्ला द्वितीया को प्रतिमाह अथवा उसके निकटवर्ती किसी उपयुक्त दिन अणुव्रत के संदर्भ में संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। संगोष्ठी की तिथि, दिनांक व विषय इस प्रकार है–

मृगसर शुक्ला द्वितीया	4 दिसम्बर 2013	जरूरी है जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा
पौष शुक्ला द्वितीया	3 जनवरी 2014	अणुव्रत : एक सार्वभौम आचार संहिता
माघ शुक्ला द्वितीया	1 फरवरी 2014	सम्प्रदायमुक्त धर्म अणुव्रत
फाल्गुन शुक्ला द्वितीया	3 मार्च 2014	वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य में अणुव्रत
चैत्र शुक्ला द्वितीया	1 अप्रैल 2014	राष्ट्रीय समस्याएं : समाधायक अणुव्रत
वैशाख शुक्ला द्वितीया	1 मई 2014	साम्प्रदायिक सद्भाव और अणुव्रत
ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया	30 मई 2014	पर्यावरण संतुलन का सूत्र अणुव्रत
आषाढ़ शुक्ला द्वितीया	29 जून 2014	नशामुक्त हो जीवन
श्रावण शुक्ला द्वितीया	29 जुलाई 2014	अणुव्रत जीवनशैली
भाद्रपद शुक्ला द्वितीया	27 अगस्त 2014	नैतिक शक्तियों का समीकरण
आश्विन शुक्ला द्वितीया	26 सितम्बर 2014	स्वस्थ समाज संरचना के सूत्र

- परम श्रद्धेय आचार्य महाश्रमणजी ने 28 दिसम्बर 2013 को देवगढ़ में फरमाया कि मासिक शुक्ला द्वितीया का कार्यक्रम गुरुकुलवास में हो उसका जिम्मा जहां रहे वहां की प्रवास व्यवस्था समिति अथवा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा का रहना चाहिये। प्रति शुक्ला के जो विषय दिये गये हैं वे गुरुकुलवास या बहिर्विहार में प्रातःकालीन में रखे जायें तो अच्छे हैं सुविधानुसार दोपहर में भी रखे जा सकते हैं।

- **अणुव्रत पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन**

अणुव्रत पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 26 से 28 सितम्बर 2014 को दिल्ली में आयोजित होना निर्णीत हुआ है। जिसमें देश व विदेश के अनेक बुद्धिजीवी, शिक्षाविद्, साहित्यकार, धर्मगुरु, प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व, राजदूत, छोटे देशों के प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति को आमंत्रित किए जाने की योजना है। सम्मेलन में दो विषयों पर चर्चा होगी–

1. Anuvrat and the vision of a sustainable World.
2. Anuvrat and its relevance with modern day circular economy.

- यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन अध्यात्म साधना केन्द्र महरौली में आयोजित किया जायेगा।
- इस हेतु website http://www.anuvrat.info पर कार्य प्रगति पर है। इस वेबसाइट के माध्यम से सम्मेलन में प्रतिभागिता हेतु ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन एवं उसमें ही विचार-विमर्श व आवासीय परिसर संभव हो सकेगा।
- अणुव्रत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन को सफल बनाने के लिये Professional Event Manager से भी बात की गयी है।
- आमंत्रण पत्र व कॉन्फ्रेंस की जानकारी अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त लोगों, जैन प्रोफेसर्स को प्रेषित की जा चुकी है जिसमें यू. के., कनाडा, फ्रांस, पोलैण्ड, जर्मनी, बेल्जियम, जापान आदि देश सम्मिलित हैं।
- भारत में अन्तर्राष्ट्रीय Embassies से भी सम्पर्क स्थापित करने का कार्य जारी है।
- संभागियों को दी जाने वाली 5 पुस्तकों के साहित्य सेट का निर्धारण भी कर लिया गया है।
- जैन website http://www.herenow4u.net को भी सम्मेलन की जानकारी प्रेषित कर दी गयी है।
- इस सम्मेलन के संयोजक **श्री सुरेन्द्र बोरड़, बेल्जियम हैं।**

- **अणुव्रत रैली**

अणुव्रत अभियान के साथ आचार्य तुलसी की सशक्त पहचान बनी हुई है। नैतिकता की पुनः प्रतिष्ठा एवं जन साधारण की अद्भुत अभिव्यक्ति रैलियों के माध्यम से प्रखरता के साथ मुखर होती है।

- शताब्दी वर्ष पर आयोजित रैलियां सामूहिक धर्मसंघ की अनुशासन एवं आध्यात्मिक वैभव की परिचायक बने इस हेतु समिति द्वारा रैली का प्रारूप सुनिश्चित किया गया।
- **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी अणुव्रत यात्रा का प्रारूप**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर गुरुकुलवास और अन्य स्थानों पर समायोज्य रैली का प्रारूप इस प्रकार है-

- **रैली का नाम** – आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी अणुव्रत यात्रा।
- **रैली का समय** – प्रातः स्थानीय सुविधानुसार।
- **रैली का स्वरूप** –
  - जैन ध्वज
  - आचार्य जन्म शताब्दी लोगो (तख्ती, ध्वज या बैनर)।
  - एक बैनर, जिसमें गुरुदेव तुलसी के चित्र के साथ रैली का नाम 'आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी अणुव्रत यात्रा' अंकित हो।
  - रैली में इनकी संभागिता रहे- ज्ञानशाला व अन्य विद्यालयों के विद्यार्थी, कन्यामंडल, महिला मंडल, युवक परिषद्, अणुव्रत समिति, तेरापंथी सभा व अन्य।
- **विशेष** – रैली में संभागियों के हाथों में तख्तियां रहें, जिनमें अणुव्रत के ग्यारह नियम पृथक्-पृथक् लिखे हुए हों तथा कुछ तख्तियों में गुरुदेव के फोटो भी रख सकते हैं। सभी तख्तियों में जन्म शताब्दी का लोगो हो। सभी संस्थाओं के कार्यकर्ता अपने-अपने गणवेश में रहने का प्रयास करें। पुरुष यथासंभव श्वेत वस्त्रों में रहें तो उपयुक्त होगा। भजन मंडली साथ में रह सकती है। यदि हो तो आचार्य तुलसी की स्मृति में रचित व अणुव्रत गीतों का संगान किया जा सकता है। यदि बैण्ड की व्यवस्था हो तो उसके द्वारा भी उपयुक्त गीतों का संगान हो सकता है। यदि झांकियां हों तो गुरुदेव तुलसी और अणुव्रत से सम्बन्धित हो सकती हैं।
- **घोष** -

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी की जय हो।
अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी की जय हो।
प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ की जय हो।
अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की जय हो।
संयमः खलु जीवनम् – संयम ही जीवन है।
बदले युग की धारा : अणुव्रतों के द्वारा।

नशा-मुक्त जीवन उत्तम विचार ; मानव जीवन का शृंगार।

अणुव्रतों का यह संदेश ; नशामुक्त हो सारा देश।

निज पर शासन ; फिर अनुशासन।

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष ; सफल हो, सुफल हो।

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष ; मंगलमय हो, मंगलमय हो।

- **नोट** – रैली के उपर्युक्त प्रारूप में स्थानीय सुविधानुसार वांछित परिवर्तन भी किया जा सकता है।

- **राष्ट्रव्यापी अणुव्रत संकल्प यात्रा - (रथ यात्रा) प्रारम्भ**

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत कहलाये। कैसे ? उनकी 60,000 कि.मी. की लम्बी पद यात्रायें जन जागरण का आधार बनी। उन संस्मरणों में नव ऊर्जा का जन चेतना को मुखर करने के इस अभियान के अन्तर्गत अणुव्रत संकल्प यात्रा आचार्य तुलसी के विहार क्षेत्रों एवं अन्य क्षेत्रों से गुजरते हुये दिल्ली पहुँचेगी। यह यात्रा अपनी निर्धारित तिथि पर प्रारम्भ हो चुकी है। इसके मुख्य संयोजक **श्री संजय खटेड़, दिल्ली** हैं।

1. लाडनूं रथ – राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश से दिल्ली। (5 नवम्बर 2013)
2. मुम्बई रथ – महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ से दिल्ली। (30 नवम्बर 2013)
3. कोलकाता रथ – पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, मेघालय, झारखंड, नेपाल, भूटान, उड़ीसा से दिल्ली। (24 नवम्बर 2013)
4. बैंगलोर रथ – कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, केरल, पांडिचेरी से दिल्ली। (1 दिसम्बर 2013)

- इन अत्याधुनिक रथों में ऑटोमेटिक हाइड्रोलिक प्लेटफार्म हैं, जिस पर साउंड एवं लाईट की व्यवस्था है। इस प्लेटफार्म से प्रवचन व भाषण दिया जा सकता है। डॉक्यूमेंट्री फिल्म आदि दिखाने के लिए अन्दर टीवी व बाहर दिखाने के लिए प्रोजेक्टर की व्यवस्था है। पूरी गाड़ी वातानुकूलित है। बाहर में फ्लैशलाइट है, जिससे मैदान में दूर तक रोशनी होगी।
- **उद्देश्य** – इन रथों के माध्यम से निम्नोक्त कार्य किए जाने का निर्धारण किया गया है -
  1. ग्यारह हजार अणुव्रत पट्ट का स्थापन, 2. दो लाख नोटबुक का वितरण, 3. होर्डिंग, बैनर लगाना, 4. अणुव्रती बनाने का अभियान, अणुव्रत संकल्प पत्र भरवाना, 5. आचार्य तुलसी अभिवंदना एवं अणुव्रत गीतों का प्रसारण, 6. आचार्य तुलसी व अणुव्रत पर डाक्यूमेंट्री का प्रसारण, 7. आचार्य तुलसी के जीवन पर निर्मित एनिमेशन फिल्म का प्रसारण, 8. फोल्डर्स एवं पेम्फलेट के माध्यम से आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की प्रस्तुति, 9. व्यावसायिक अणुव्रत पट्ट लगवाना, 10. आचार्य तुलसी स्टीकर लगवाना व 11. आचार्य तुलसी का हिंदी व इंग्लिश भाषा में साहित्य वितरण करना।
- अणुव्रत संकल्प यात्रायें पूरे भारत में जन जागृति ला रही है। इन चारों रथों से राजनीतिज्ञों का सान्निध्य भी प्राप्त हो रहा है। राजनीतिज्ञों के साथ इन रथों में अणुव्रत समिति के भी सदस्य व तेरापंथ धर्मसंघ की संगठनमूलक संस्थाओं के कार्यकर्तागण तत्परता के साथ उपस्थित हो रहे हैं।

- **निरंतर गतिशील रथों की उपलब्धि परक यात्रा का संक्षिप्त विवरण** – अणुव्रत रैलियों एवं उद्घोषों से अनुगुंजित इस यात्रा का भव्य स्वागत जन मानस द्वारा किया जा रहा है व जगह- जगह पर विशिष्टता के साथ भव्य कार्यक्रमों की आयोजना जन उत्साह को दर्शित कर रही है। अणुव्रत संकल्प यात्रायें अगस्त 2014 के अंतिम सप्ताह तक परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में दिल्ली पहुँचेगी।

- **उत्तरांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा, लाडनूं**

एकादशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में यात्रा का शुभारम्भ हुआ। उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की उपस्थिति में इस बहुआयामी उत्तरांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा का उद्घाटन किया।

- यात्रा में सान्निध्य – समणी निर्वाणप्रज्ञाजी, समणी मल्लयप्रज्ञाजी।
- क्षेत्रीय संयोजक – श्री अशोक दूगड़।
- प्रायोजक – श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लाडनूं।
- **यात्रा के पड़ाव - रथ के गोल पहियों ने नापी लम्बी दूरियां**

लाडनूं, कालीटा, सुजानगढ़, छापर, बीदासर, रतनगढ़, मोमासर, तोलियासर, श्रीडूंगरगढ़, कालू, लूणकरणसर, सूरतगढ़, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, नोहर, संगरिया, श्रीगंगानगर, पदमपुर, रायसिंहनगर, गजसिंहपुर, विजयनगर, अनूपगढ़, घड़साना मंडी, रावला मंडी, खाजूवाला, बाजु ग्राम, 3KJM आरडी, बीकानेर, गंगाशहर, भीनासर, नोखा, रासीसर, देशनोक।

- उत्तरांचल अणुव्रत यात्रा भेंटती करी है उन अतीत तेजस्विनिकाओं की जो अपनी माटी के लाल की शताब्दी की यात्रा पर उल्लास व गौरव भी हृदय से मनाकर की हर दहलीज पर जगमगा उठे हैं। भीतर और बाहर प्रकाश फैलाते इस अविनश्वर दीपों की ज्योति जलाने में लगा कर्मठ कार्यकर्ताओं का श्रम भी वंदनीय है।

- **पश्चिमांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा, मुम्बई**

  महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री पृथ्वीराज चव्हाण द्वारा यात्रा का उद्घाटन किया गया।
- यात्रा में सान्निध्य – समणी शशिप्रज्ञाजी, समणी ज्ञानप्रज्ञाजी।
- क्षेत्रीय संयोजक – श्री रमेश सुतरिया।
- प्रायोजक – श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुम्बई।
- **यात्रा के पड़ाव – क्लान्ति दूरकर स्वस्थ बनाते अणुव्रत के वर्चस्वी स्वर**

  आजाद मैदान, एलिफिन्स्टन, बान्द्रा, सांताक्रूज, अंधेरी, जोगेश्वरी, गोरेगांव, मलाड, बोरिवली, दहिसर, मीरा रोड, वसई, नाला सोपारा, कांदिवली, विरार, सफाले, पालघर, बोइसर, भायंदर, भिवंडी, उल्हासनगर, मुम्ब्रा, ठाणे मध्य, विक्रोली, विक्रोली कन्नमवार, भांडुप, कांदिवली पश्चिम, कुर्ला नेहरू नगर, कुर्ला जुना, मानखुर्द, चेम्बूर, कुर्ला वेस्ट, मुलुंड, सिडीन कौलीवाड़ा, कोपरखैरणे, घणसोली, वाशी, नेरुल, सीवुड बेलापुर, उरण, पनवेल, डोंबिवली, खोपोली, पुणे, पिंपरी चिंचवड़, मुम्बई।
- भागमभाग भरी मुम्बई में किसी को किसी के लिये वक्त कहां है? परंतु पश्चिमांचल में दिशा पाते ही उत्साह की सी पर [illegible] का नजारा है। चाहे स्कूली हों या फिल्मी कलाकार, प्रसिद्ध राजनेता हों या सामान्य जन सभी मुम्बई जैसे महानगर भी अणुव्रत पढ़कर अपने जीवन को सार्थक बना रहे हैं। पश्चिमांचल अणुव्रत यात्रा में नैतिक क्रांति को प्रभावशाली बनाने के लिये लगे रहे कार्यकर्ताओं का अहर्निश श्रम अनुकरणीय है।

- **पूर्वांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा, कोलकाता**

  साध्वीश्री अणिमाश्रीजी व साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में शुभारम्भ हुआ। पद्मश्री हेमामालिनी द्वारा उद्घाटन किया गया।
- यात्रा में सान्निध्य - साध्वी मानसप्रज्ञाजी, साध्वी ज्योतिप्रज्ञाजी।
- क्षेत्रीय संयोजक - श्री तुलसी कुमार दुगड़।
- प्रायोजक - मैसर्स केजीडी फाउण्डेशन, कोलकाता
- यात्रा के पड़ाव - रथ यात्रा का कुसुम-खिलता रहा नित नये प्रसून

  कोलकाता, साउथ हावड़ा, उत्तर हावड़ा, लिलुआ, बैली बैद्यबाटी सभा, उत्तर मध्य कोलकाता, कोलकाता पूर्वांचल सभा, उत्तर पाड़ा, हिंदमोटर, रिसड़ा, बर्धमान, दुर्गापुर, सैंथिया, रामपुरहाट, दुबराजपुर, रामपुर, हाट, बागड़ा, बालूघाट, किशनगंज, बेलडांगा, बेलडांगा, कलिया चौक, मैदा, कालीगंज, रायगंज, दालखोला, किशनगंज, कटिहार, पूर्णिया भट्टा बाजार, खुश्कीबाग, गुलाबबाग, अररिया आर. एस. अररिया कोर्ट, फारबिसगंज, सिलीगुड़ी।
- प्रमुख स्थानों पर भव्य कार्यक्रम व कार्यक्रमों में विशाल जनमेदिनी का जुड़ाव 'अणुव्रत' के विशाल वृक्ष को पुष्पित कर रहा है। कार्यकर्ताओं के समर्पण को प्रणाम।

मानवीय सम्बन्धों में उदार दृष्टिकोण का विकास हो। - आचार्य तुलसी

• दीक्षाकल्याण अणुव्रत संकल्प यात्रा, बेंगलोर

साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी के सान्निध्य में शुभारम्भ हुआ। कर्नाटक मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैया द्वारा उद्घाटन किया गया।

- यात्रा में सान्निध्य – समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी।
- क्षेत्रीय संयोजक – श्री दीपचन्द नाहर।
- प्रायोजक – मैसर्स एलईसीसी कैपिटल मार्केट लि., बेंगलोर
- **यात्रा के पड़ाव – छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन की दिशा में भाषा का कोई गतिरोध नहीं**

  फ्रीडम पार्क-बेंगलोर, विजयनगर तेरापंथ सभा, राजाजीनगर तेरापंथ सभा, यशवंतपुर तेरापंथ सभा, टी. दासरहल्ली तेरापंथ सभा, गांधीनगर सभा, आडुगोडी तेरापंथ सभा, होसकोटा, कुम्भलगुड़, चिकुदी, रामनगर, होसूर, सेलम, ईरोड, तिरुपुर, रामपुरम, कोयम्बटूर, कोलीकट, डामरहल्ली, एर्नाकुलम, केरल, त्रिवेन्द्रम, शिवाकाशी, मदुरै, त्रिची, कुम्भकोणम, मायावरम, सिरकाली, चिदंबरम, कुड्डलूर, पांडिचेरी, विल्लुपुरम, तिरुकोईलूर, तिरुवन्नामलै।
- कन्नड़, तमिल, तेलगु, मलयालम भाषा प्रधान क्षेत्रों में भी अणुव्रत की पुरज़ोर गूंज एवं विशाल कार्यक्रमों में उमड़ता सैलाब – क्या, कारण है? संयम से व्यक्तित्व विकास। विकास की इस लहर को जनमानस तक ले जाने के लिये लगे रहे अथक श्रम महत्त्व है।

> अनुकूल और प्रतिकूल किसी भी परिस्थिति में
> अपना धैर्य मत खोओ।
> – आचार्य तुलसी

* **गौशाला को मिला इन अत्याधुनिक रथों के निर्माण का गौरव** - ज्ञातव्य है कि अणुव्रत संकल्प यात्रा को समर्पित, अणुव्रत आचार संहिता मुद्रित ज्ञान का संदेश देते यह चार रथ गौशाला के समाजसेवी श्री उत्तमचन्द नाहटा के निर्देशन में तैयार किये गये हैं और आज यह देश के चार भागों क्रमश: लाडनूं (राजस्थान), मुम्बई (महाराष्ट्र), कोलकाता (पश्चिम बंगाल), बैंगलोर (कर्नाटक) दक्षिण के क्षेत्रों में जन जागृति व नैतिक चेतना का संचार कर रहे हैं।

* **अणुव्रत पट्ट**

सभी भवनों, अस्पतालों व सार्वजनिक संस्थानों व विद्यालयों में प्रारंभ से ही अणुव्रत आदर्शों की अनुरूप नैतिकता का संस्कार पल्लवित हो तथा वे संस्कार पुष्ट बनें। इस दृष्टि से ग्यारह हजार अणुव्रत पट्ट लगाने की योजना है।

इन पर अणुव्रत के ग्यारह नियमों के साथ विद्यार्थी एवं शिक्षक अणुव्रत के नियम भी उल्लिखित रहें, ऐसी परिकल्पना है। इस पट्ट की लागत ४४८ रुपए है। इस परियोजना के संयोजक **श्री प्रतापमल दूगड़, कोलकाता** हैं।

* इसके अतिरिक्त निम्नांकित क्षेत्रों में लगभग ४,१७६ पट्ट भेजने का कार्य प्रगति पर है।

ANUVRAT PATT

	HINDI	ENGLISH	TOTAL
ORDER	7,300	3,700	11,000

ANUVRAT PATT DISPATCH AS ON 25-1-2016

S.NO.	PLACE	HINDI	ENGLISH	TOTAL
1	LADNUN	557	0	557
2	MUMBAI	120	380	500
3	SURAT	427	70	497
4	BANGALORE	500	0	500
5	KOLKATA	460	0	460
6	GUWAHATI	0	300	300
7	RAJSAMAND	500	0	500
8	CHANDIGARH	300	200	500
9	DELHI	256	0	256
10	CHENNAI	0	500	500
11	LUDHIANA	500	0	500
12	JODHPUR	500	0	500
13	INDORE	0	500	500
14	HYDERABAD	0	500	[illegible]
	TOTAL	[illegible]	[illegible]	[illegible]

PENDING ANUVRAT PATT

S.NO.	PLACE	HINDI	ENGLISH	TOTAL
1	BANGALORE	0	410	410
2	THANE	300	0	300
3	SURAT	440	0	440
4	KANPUR	300	0	300
5	JALNA	100	0	100
6	JALGAON	500	0	500
7	AHMEDABAD	200	0	200
8	RAIPUR	200	0	200
9	[illegible]	400	100	500
10	CUTTACK	200	160	360
11	DELHI	0	216	216
	TOTAL	3,130	1,040	4,176

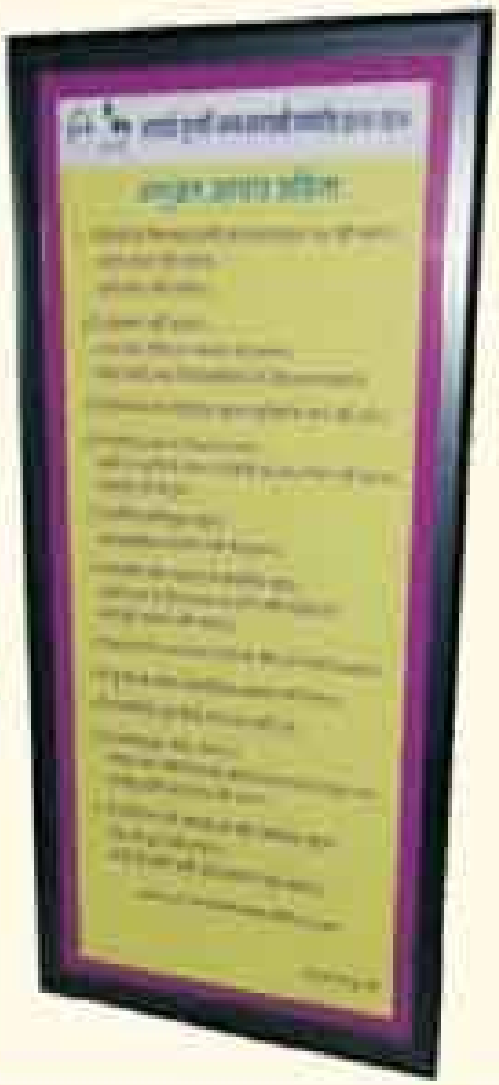

* **व्यापारी अणुव्रत पट्ट**

व्यापारिक प्रतिष्ठानों में प्रामाणिकता एवं नैतिक आचरण के प्रति सजग रहने की सतत प्रेरणा मिलती रहे इस हेतु 1,00,000 व्यापारी अणुव्रत पट्ट बनाये गये हैं। इन्हें अधिकाधिक व्यापारिक प्रतिष्ठानों में लगाने का प्रयास जारी है।

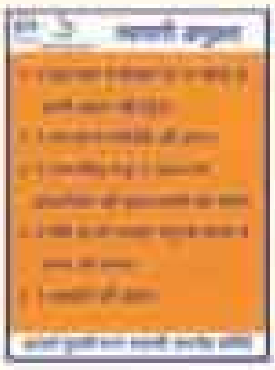

* **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी स्टीकर**

यह स्टीकर 3,00,000 की संख्या में बनाये गये हैं जिनमें से 2,00,000 लाख स्टीकर समस्त तेरापंथी सभाओं को प्रेषित किये जा चुके हैं व 1,00,000 स्टीकर 'अणुव्रत संकल्प यात्रा' के दौरान विभिन्न क्षेत्रों व समुदायों में वितरित किये जा रहे हैं।

* उल्लेखनीय है कि इन स्टीकरों का प्रयोग हर समुदाय के व्यक्ति अपनी गाड़ी, बाईक, घर, प्रतिष्ठान आदि अनेकानेक जगहों पर करते हुये गौरव का अनुभव कर रहे हैं एवं तुलसी की महानतम गाथा को, उनकी शताब्दी को जन-जन में अमर बनाने में योगभूत बन रहे हैं।

* **आचार्य तुलसी टी-शर्ट** - निर्धारित वेशभूषा कार्यकर्ताओं में लक्ष्य के प्रति सजगता व समर्पण को तो परिलक्षित करती ही है साथ ही देखने वालों की दृष्टि में भी संगठन का सशक्त परिचय बनती है।

* इस चिंतन को मूर्त रूप देने के लिये 3,000 टी-शर्ट बनवाये गये हैं, जिनका प्रयोग अणुव्रत रैलियों, अणुव्रत संकल्प यात्राओं व भावी चरणों के आयोजनों में कार्यकर्ताओं द्वारा किया जायेगा। इसके प्रायोजक **श्री अशोक सुराणा, बेंगलोर** हैं।

* **डॉक्यूमेंट्री**

ऑडियो विज्युअल प्रस्तुति का अपना अलग आकर्षण होता है और यह देखने वालों पर अपना गहरा प्रभाव भी छोड़ती है। आचार्य तुलसी के बहुआयामी विराट व्यक्तित्व को जानने व समझाने के लिये 4 डॉक्यूमेंट्री तैयार की गयी हैं जिनका प्रयोग अणुव्रत संकल्प यात्रा के दौरान बखूबी किया जा रहा है। ये डॉक्यूमेंट्री **श्री ललित खाबेड़** के निर्देशन में तैयार की गयी है। तैयार डॉक्यूमेंट्री के नाम इस प्रकार है - 1. The Making Of Anuvrat Sankalp Yatra (Rath), 2. Kanyakumari To Laddakh Countdown Flag Journey, 3. Global Voice Film, 4. Asali Azadi Apnao.

* **बैनर**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह सभी तेरापंथी सभाओं द्वारा गरिमापूर्ण तरीके से अपने-अपने क्षेत्रों में समायोजित हो रहे हैं। समारोह की एकरूपता की दृष्टि से बैनर की डिजाइन तैयार कर महासभा से संलग्न सभी सभाओं को प्रेषित किये गये हैं।

* **होर्डिंग्स**

पूरा देश एक समयधायक युगपुरुष के कर्तृत्व की ऊँची उड़ान व उसके करिश्माई व्यक्तित्व की संक्षिप्त झलक देख श्रद्धावनत हो सके इसीलिये सभी भवन, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, मेन बाजार व प्रमुख मार्किट पर 'होर्डिंग्स' लगाने का प्रावधान भी रखा गया है।

* एकरूपता को ध्यान में रखते हुये होर्डिंग्स का कलर व डिज़ाइन निर्धारित कर दिया गया है।
* इन होर्डिंग्स हेतु सहयोग राशि देने वाले अनुदानकर्ता का नाम होर्डिंग पर संयोजक के रूप में उल्लेखित किया जा सकता है। अतः जो भी भाई-बहिन अथवा संस्था सहयोग करने को इच्छुक हैं वे अपने क्षेत्र के संबंधित प्रमुख अधिकारियों से संपर्क स्थापित करें।

Banner Size : 6 ft. x 3 ft.
Hoarding Size : 16 ft. x 10 ft.

* **विज्ञापन**

न्यूज पेपर आदि में शताब्दी वर्ष समारोह के विज्ञापन का प्रकाशन भी समिति द्वारा सुनिश्चित है। तदनुरूप ही क्षेत्रीय स्तर पर आपका सहयोग का सफलता का परिचायक होगी।

Add Half Page

Add Quarter Page

जब तक व्यक्ति अपने आचरण के प्रति सजग नहीं बनेगा, जीवन में कोई भी व्यक्ति उसे सुख और शांति का वरदान नहीं दे सकेगा।

- **अणुव्रत नोट बुक्स**

स्कूलों में वितरित करने हेतु 2,00,000 प्रतियां तैयार की गई हैं जो अणुव्रत संकल्प यात्रा में प्रयोग की जा रही हैं। शिक्षक व विद्यार्थी अणुव्रत नियमावली अंकित इन नोट बुक्स के प्रायोजक **आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउण्डेशन, मुम्बई** है।

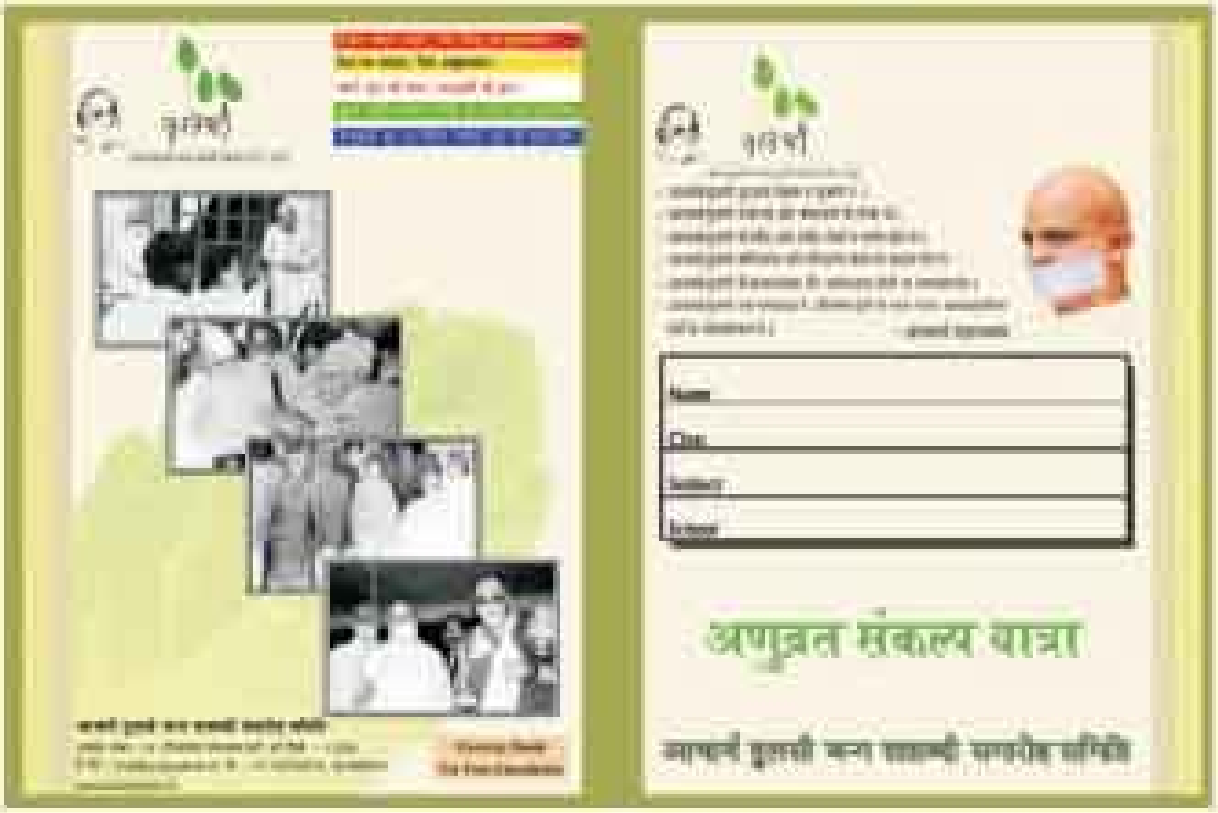

- **अणुव्रत प्रवेताओं का निर्माण**

प्रबुद्धता, प्रभावकता, प्रातिभिक क्षमता, प्रवीणता एवं प्रज्ञा, इन गुणों से युक्त व्यक्ति अणुव्रत आंदोलन से जुड़ें और इसके माध्यम से जन-जन में नैतिकता की अलख जगाएं, दूसरों को प्रशिक्षण दें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अणुव्रत प्रवेता प्रकल्प की योजना को रेखांकित करते हुए इसे जन्म शताब्दी के एक उपक्रम के रूप में स्वीकृत किया गया। इस प्रकल्प के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु अधिकृत प्रवक्ता होंगे। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अणुव्रत प्रवेता, अणुव्रत मित्र व अणुव्रत प्रशिक्षक के रूप में क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी के कार्यकर्ता होंगे।

- 100 अणुव्रत प्रवेता तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके संयोजक **श्री सम्पत नाहटा दिल्ली** व प्रायोजक **अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास** है।
- अणुव्रत प्रवेता का प्रथम शिविर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में जैन विश्व भारती, लाडनूं में दिनांक 12 से 18 अक्टूबर 2013 तक आयोजित किया गया। जिसमें 12 व्यक्तियों की सहभागिता रही। जिसमें चारित्रात्माओं एवं प्रबुद्ध व्यक्तित्व डॉ. महेन्द्र कर्णावट, श्री लालचन्द सिंघी, डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, श्री के. सी. जैन आदि महानुभावों ने प्रशिक्षण दिया।
- आगामी कार्यक्रम पूज्यप्रवर के दिल्ली आगमन के बाद होंगे। जिसमें अणुव्रत प्रशिक्षक शिविर एवं अणुव्रत मित्र का प्रशिक्षण एवं साथ ही अणुव्रत प्रवेताओं का दूसरा प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित होना है। जिन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया उनके प्रमाण पत्र वितरण का कार्यक्रम भी गुरुदेव के सान्निध्य में आयोजित होगा।

- **अभिनव सामायिक - विराट आयोजन**

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर में 5 फरवरी 2014 को विराट स्तर पर मध्याह्न 1 से 2 बजे के मध्य अभिनव सामायिक का आयोजन होना निर्धारित है। इसमें लगभग ग्यारह हजार लोगों को संभागी बनाने की योजना है। इस प्रकल्प के संयोजक **श्री राजकुमार फलावत** हैं।

- **आचार्य तुलसी के संपूर्ण साहित्य का 'तुलसी वाङ्मय' के रूप में संकलन व व्यवस्थित प्रकाशन**

आचार्य तुलसी एक महान व विशिष्ट साहित्यकार के रूप में अपनी पहचान रखते हैं। उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर आचार्य तुलसी के साहित्य को 'तुलसी वाङ्मय' के अन्तर्गत व्यवस्थित रूप में प्रकाशित करने की योजना है। गुरुदेव के साहित्य की संपादिका महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के निर्देशन में गुरुदेव द्वारा विविध विधाओं और विविध भाषाओं में प्रणीत, पूर्व प्रकाशित अथवा कतिपय अप्रकाशित निबन्धों और रचनाओं को विषय वर्गीकृत भी किया गया है। इस अत्यधिक श्रम साध्य कार्य में साध्वियों और मुमुक्षु बहिनों की पूरी टीम लंबे समय से जुटी हुई है। फलस्वरूप यह कार्य अब अन्तिम दौर में है।

- इसके अन्तर्गत 100 पुस्तकों का निर्माण कार्य जारी है जिसके 1100 सेट निर्माण का लक्ष्य है जो देश के प्रमुख पुस्तकालयों, संस्थाओं व जैन संप्रदायों के प्रमुख स्थलों पर संग्रहणीय व ज्ञानार्थ उपलब्ध कराये जायेंगे।
- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर व्यवस्थित रूप में प्रकाशित आचार्य तुलसी का साहित्य आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-पाथेय बन सकेगा। आधुनिक युग के लिए जन्म शताब्दी के प्रसंग में प्रदत्त यह एक अविस्मरणीय सौगात होगी।
- यह महत्त्वपूर्ण कार्य आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के अंतर्गत आदर्श साहित्य संघ द्वारा संपादित किया जा रहा है। इसके प्रायोजक **श्री दिलीप सिंघवी, जोधपुर** हैं।

- **तुलसी महाकाव्यम् आशुकविरत्न पं. रघुनंदजी द्वारा रचित 'तुलसी महाकाव्यम्' का संपादन-अनुवादन भी किया गया है।**

- **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित होने वाले तुलसी वाङ्मय की ग्रन्थ सूचि**

- **आत्मकथा** - मेरा जीवन मेरा दर्शन भाग 1 से 25 तक।
- **काव्य साहित्य** - 1. कालूयशोविलास भाग एक व दो, 2. माणक महिमा, डालिम चरित्र, 3. मगन चरित्र, 4. मगन चरित्र, 5. सेवाभावी, 6. नन्दन-सरस-सुषमा, 7. चंदन की चुटकी भली, 8. आषाढ़भूति की बीर, 9. अणुव्रत के आलोक-पथ, 10. श्रावक सम्बोध, श्रावक प्रतिक्रमण, 11. प्रज्ञापर्व मीलीडेम वर्ण व्याख्यान, 12. शैशव प्रबोध, 13. नंदन निकुंज, 14. सोमरस, 15. सुधारस, 16. तुलसी पद्यावली, 17. आचार्य तुलसी के पत्र भाग एक से तीन।
- **गद्य साहित्य (विषय वर्गीकृत)** - 1. महावीर : जीवन और दर्शन, 2. मैं कहे! मेरा सिद्धांत, 3. क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु, 4. प्रज्ञापुरुष जयाचार्य, 5. महामनस्वी आचार्य श्री कालूगणी, 6. अध्यात्म : अंतस का स्पर्श, 7. निर्ग्रन्थ प्रवचन ही परम सत्य है, 8. अर्हत् ने कहा, 9. जैन दर्शन : आत्म दर्शन, 10. जैन तत्त्व विद्या, जैन तत्त्व प्रवेश भाग 1 व 2, 11. अहिंसा : अमृत का महासागर, 12. धर्म्य भरत पद्मावलि, 13. जैन जीवनशैली, 14. निर्माण नये मानव का, 15. प्रेक्षाध्यान : अध्यात्म का सोपान, 16. अणुव्रत के आलोक में, 17. अणुव्रत : गति-प्रगति, 18. अणुव्रत नैतिकता का शंखनाद, 19. शिक्षा : कल्याण की प्रक्रिया, 20. संदेश : देश के नाम, 21. दोनों हाथ : एक साथ, 22. कुहासे में उगता सूरज, 23. कार्यकर्ता संवाद की, 24. मेरे अनुभव, 25. प्रशिक्षण के बीजमंत्र।
- **प्रवचन साहित्य** - 1. बूंद-बूंद से घट भरे, 2. अंतर के पट खोल, 3. जागो की सुधि लेइ, 4. मंजिल की ओर, 5. मन की गांठें खोल, 6. काल को लो ताल कर, 7. चलना है पल की घली, 8. जीव जने जन ज्ञान को, 9. संयम ही जीवन है, 10. अंधकार के गहरे रोते, 11. भौर भई, 12. मंगल सम्भावे, 13. घर का रास्ता, 14. मानवता पुकारे, 15. ज्योति जले : मुक्ति मिले, 16. धम्मो मंगलम् मिट्ठई, 17. धम्मो परमसुरह, 18. तव धर्म सम्भावे, 19. रे मार्गिको! विचारो, 20. धर्म की लौ जलायें हम।
- **संस्कृत साहित्य** - 1. जैन सिद्धान्त दीपिका, 2. काव्यकुसुम (संस्कृत पद्य), 3. निबंधनिकुरम्ब (संस्कृत गद्य), 4. आचार्य तुलसी साहित्य की बीज कथायें, 5. संवाद : शिखर पुरुषों के साथ, 6. संवाद : प्रबुद्धजनों के साथ, 7. तुलसी सुभाषितम् भाग एक से चार, 8. आचार्य तुलसी के संदेश भाग एक से पांच। इसके संयोजक **श्री मर्यादा कुमार कोठारी, जोधपुर** हैं।

- **आचार्य तुलसी की चयनित कृतियों का अंग्रेजी अनुवाद**

आचार्य तुलसी की पांच चयनित कृतियों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद जन्म शताब्दी के प्रसंग में किये जाने की परियोजना है। वे पांच कृतियां हैं - 1. समता की आंख, चरित्र की पांख, 2. गृहस्थ को भी अधिकार है धर्म करने का, 3. बैसाखियां विश्वास की, 4. श्रावक संबोध व 5. समस्या का समाधान : अहिंसा की नौका।

इनमें से प्रथम चार कृतियों का अनुवाद कार्य परिसंपन्न हो चुका है। अन्तिम कृति का कार्य संपूर्णता की ओर है। प्रकाशन **आदर्श साहित्य संघ** द्वारा किया जायेगा। इसके संयोजक **श्री विनोद कुमार चोरड़िया, कोलकाता** हैं।

★ 'आचार्य तुलसी स्मृति ग्रन्थ' का निर्माण

आचार्य तुलसी की जीवन गाथा भारतीय चेतना का अभिनव उन्मेष है। आचार्य तुलसी द्वारा तेरापंथ जैन शासन, भारतीय दर्शन और मानव जाति को प्रदत्त अवदानों के संदर्भ में आचार्य तुलसी स्मृति ग्रंथ का निर्माण किया जा रहा है, जिसके पाँच भाग निर्धारित किए गए हैं -
1. व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, 2. सूक्तियों के गवाक्ष, 3. आचार्य तुलसी : चिन्तन और प्रयोग, 4. आचार्य तुलसी और अणुव्रत, व 5. दर्शन के परिप्रेक्ष्य में।

- लगभग छह सौ पृष्ठों में प्रकाशित होने की संभावना लिए इस विशाल ग्रंथ का लोकार्पण समारोह 12 अक्टूबर 2014 को दिल्ली में प्रस्तावित है। इसके संपादक **श्री अजय चोपड़ा, जयपुर** एवं संयोजक **श्री रमेश धाकड़, मुम्बई** हैं।

★ आचार्य तुलसी जीवनवृत्त का लेखन

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के पावन प्रसंग में चिंतन किया गया है कि आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त का विविध विधाओं में लेखन हो।

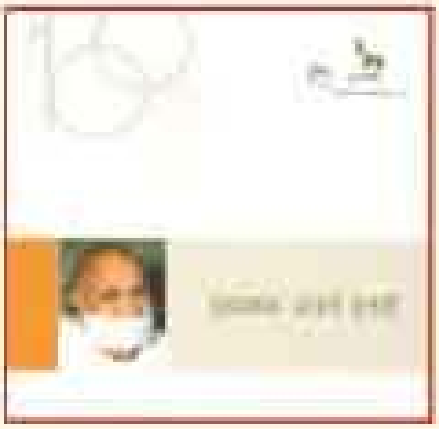

- आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित 'धर्मचक्र का प्रवर्तन' का मुनिश्री जयकुमारजी द्वारा परिवर्धित संस्करण प्रकाश में आ चुका है। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा द्वारा लिखित 'युगप्रधान आचार्य तुलसी' नामक परिचय पुस्तिका तथा मुख्यनियोजिका विभूतविभाजी द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित 'आचार्य तुलसी : द लीजेंड ऑफ ह्यूमेनिटी' कृति भी प्रकाशित हो चुकी है।
- ज्ञातव्य है कि युगप्रधान आचार्य तुलसी पुस्तक की कुल 10,000 प्रतियां व आचार्य तुलसी : द लीजेंड ऑफ ह्यूमेनिटी की 5,000 प्रतियां प्रकाशित की गयी हैं

★ आचार्य तुलसी के अवदानों पर लघु पुस्तिकाओं का निर्माण

आचार्य तुलसी के अवदानों पर लघु पुस्तिकाओं के निर्माण का कार्य भी जन्म शताब्दी के अवसर पर चल रहा है। इस हेतु पृथक-पृथक व्यक्तियों को दायित्व सौंपा गया है।

- 25 पुस्तिकाएं प्रकाशन का लक्ष्य रखा गया है जिसमें से 9 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।
- प्रकाशित कृतियों के विषय, नाम व लेखक विवरण इस प्रकार है - 1. अणुव्रत दिग्दर्शन (मुनिश्री सुखलालजी, मुनिश्री अक्षयप्रकाशजी), 2. जीवन विज्ञान (मुनिश्री किशनलालजी), 3. नया मोड़ (श्री महेन्द्र कर्णावट), 4. समण दीक्षा (समण श्रेणी), 5. योगक्षेम वर्ष (मुनिश्री सुखलालजी), 6. व्यक्तित्व निर्माण का उपक्रम (साध्वीप्रमुखाश्रीजी के निर्देशन में साध्वियां, समणी कुसुमप्रज्ञाजी), 7. राष्ट्रीय समस्या का समाधान (साध्वीप्रमुखाश्रीजी के निर्देशन में प्रो. धर्मचन्द जैन), 8. जैन एकता के संदर्भ में आचार्य तुलसी का योगदान (मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी, श्री कन्हैयालाल छाजेड़), 9. जैन विश्व भारती दिग्दर्शन (मुनिश्री मोहजीतकुमारजी)।
- प्रत्येक पुस्तक की 2,000 प्रतियां प्रकाशित की गई हैं। इसके संयोजक **श्री विनोद कुमार चोरड़िया, कोलकाता** हैं।

* **उपन्यास लेखन**

आचार्य तुलसी की मौलिक प्रगतिशील सोच व पुरातन व नवीनता का समन्वय उन्हें सबसे विशिष्ट संत की श्रेणी में ला खड़ा करता है। एक ऐसी कथा सूत्र जिसका ताना-बाना तुलसी जीवन की आकृष्टता से परिचय के साथ-साथ उनके आदर्शों की दिशा में बढ़ने की प्रेरणा भी जगाये ऐसी अपेक्षा है।

* तुलसी के सम्पूर्ण जीवन की उजली अनोखी झांकी घटनाओं के माध्यम से चित्रित हो इसके लिये उपन्यास लोकप्रिय विधा है। इस गहन चिंतन को ध्यान में रखते हुये आचार्य तुलसी के ओजस्वी जीवन पर आधारित एक उपन्यास का लेखन प्रसिद्ध साहित्यकार **डॉ. हरीश नवल** द्वारा किया जा रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार लेखन कार्य परिसमापन की ओर है। इसके संयोजक **श्री इन्दु बैंगाणी, दिल्ली** है।

* **आचार्य तुलसी पर एनिमेशन फिल्म का निर्माण**

आधुनिक तकनीक के माध्यम से किसी महान व्यक्ति के चरित्र चित्रण को किया युवा शक्ति व बाल पीढ़ी के विशेष आकर्षण का माध्यम बनती है और अधिक सशक्त बना देती है। आचार्य तुलसी के चुंबकीय व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर आधारित थ्रीडी एनिमेशन फिल्म का निर्माण जन्म शताब्दी के करणीय कार्यों की शृंखला में एक युगानुरूप कदम है। लगभग बीस मिनट की इस फिल्म में आचार्य तुलसी के जीवन के विविध घटना-प्रसंगों और तथ्यों को प्रस्तुत किया जा रहा है। इसका कार्य पूर्णता की ओर है। इसकी पटकथा का लेखन **श्रीमती सुनीता जैन, दिल्ली** द्वारा किया गया है एवं इस फिल्म के निर्माण कार्य **श्री मनीष बारड़िया, अहमदाबाद** को दिया गया है।

* **आचार्य तुलसी के ऐतिहासिक चित्रों की दीर्घा**

इतिहास जब कलाकार की अंगुलियों की करामात से कैनवास पर चित्रित हो उठता है तब वो 'कला' के रूप में और अधिक संजीव हो जाता है। इसे साकार करने के लिये आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के पावन प्रसंग पर आचार्य तुलसी के जीवन से संबंधित ऐतिहासिक चित्र दीर्घा निर्मित की जा रही है। इस कार्य हेतु 108 भव्य चित्रों का निर्माण किया गया है। जन्म शताब्दी के शुभारंभ के अवसर पर चित्रों की एक भव्य प्रदर्शनी लाडनूं में लग चुकी है, दूसरी प्रदर्शनी गंगाशहर में शान्ति के शक्तिपीठ पर जन्म शताब्दी वर्ष के दूसरे चरण की समायोजना के अवसर पर लगायी गयी है।

* इसी क्रम में तीसरे व चौथे चरण की समायोजना के अवसर पर दिल्ली में भी यह प्रदर्शनी श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र बनेगी।
* **इन भव्य यादगार चित्रों को अपनी कला से मूर्त रूप दिया है श्रीमती विद्या जैन, कांकरोली ने, श्री रोशनलाल सांखला इसके प्रायोजक बनकर सहयोग कर रहे हैं।**
* इस महत्वपूर्ण श्रमसाध्य कार्य के संयोजक **श्री सवाईलाल पोकरणा** हैं।

मत भेद भले हो, पर मन भेद न हो।

\- आचार्य तुलसी

 अमीर वह नहीं, जो भौतिक वैभव से ईश हो, बल्कि अमीर वह है, जो उत्तम आचार-विचार के वैभव से ईश हो।

* **आचार्य तुलसी छायाचित्र संकलन**

श्री सम्पत गांधी, जयपुर द्वारा वर्षों के प्रयास से संकलित आचार्य तुलसी के सम्पूर्ण जीवन के 25,000 छायाचित्रों का बेजोड़ संकलन आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति द्वारा अधिकृत कर महासभा को सादर सुपुर्द किया गया है। इस संदर्भ हेतु **श्री पन्नालाल बैद, जयपुर** ने सहयोग के साथ-साथ प्रायोजक का दायित्व भी निभाया।

- **विभिन्न नगरों में आचार्य तुलसी चौक, द्वार एवं मार्ग का निर्माण व नामकरण**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर विभिन्न नगरों में उनकी स्मृति स्तंभ के रूप में आचार्य तुलसी के नाम पर 'आचार्य तुलसी चौक', 'आचार्य तुलसी द्वार' और 'आचार्य तुलसी मार्ग' निर्माण व नामकरण आदि का कार्य द्रुत गति से चल रहा है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति ने सभी तेरापंथी सभाओं को इस हेतु प्रयास करने का निर्देश देते हुए चौक, मार्ग और द्वार का प्रारूप व डिजाइन भी प्रेषित किया है।

- इनके संयोजक **श्री पन्नालाल पुगलिया, जयपुर** हैं।
- बहुत से क्षेत्रों में इस प्रकल्प में सराहनीय कार्य हुआ है।

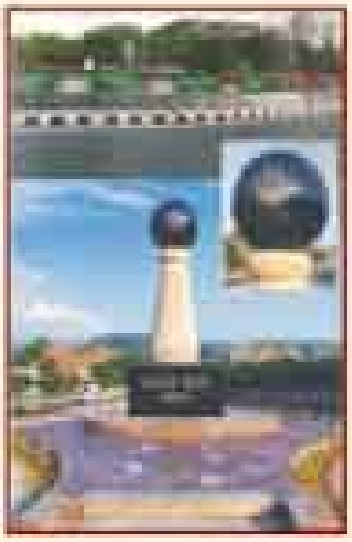

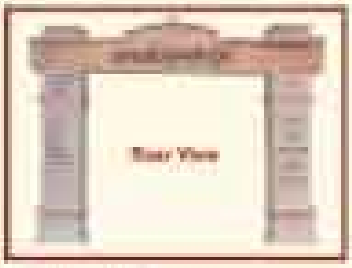

- **आचार्य तुलसी की जन्म भूमि लाडनूं में आचार्य तुलसी नगर द्वार का निर्माण**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की परियोजना लाडनूं में आचार्य तुलसी नगर द्वार का निर्माण (तीन द्वार) का कार्य श्री सुरेन्द्र घोषल के संयोजकत्व में प्रारम्भ हो रहा है। राज्य सरकार से इसकी स्वीकृति प्राप्त हो गई है। तीन नगर द्वार के प्रायोजक **श्री सुरेन्द्र घोषल परिवार, लाडनूं** हैं।

- **विद्यालयों में अणुव्रत परीक्षाओं का उपक्रम**

विद्यालयों में अणुव्रत परीक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम का निर्धारण कर निम्न पुस्तकों का चयन किया गया। नैतिक पाठशाला, अणुव्रत विशारद, अणुव्रत प्रभाकर एवं अणुव्रत रत्न। सभी तेरापंथी सभाओं, ज्ञानशालाओं, समण संस्कृति संकाय, अणुव्रत न्यास, शिक्षक संसद से स्कूलों एवं परीक्षा केन्द्रों के चयन का निर्धारण करने की योजना का प्रारूप प्रस्तुत किया गया है व परीक्षायें ऑफ लाईन एवं ऑन लाईन पद्धति से करने की परिकल्पना भी प्रस्तुत की गयी। इसके संयोजक **श्री विमलचन्द बोथरा, दिल्ली** हैं।

- दिनांक 20-3, लोढ़ासर- समिति में निर्णय लिया गया "**अणुव्रत परीक्षा का कार्य अणुव्रत शिक्षक संसद कर रहा है, ऐसा ज्ञात हुआ। शताब्दी समारोह समिति शिक्षक संसद से तालमेल कर उसी कार्य में अपेक्षानुसार जोड़-तोड़ करने का ध्यान दे ले, अलग से परीक्षा करने की अपेक्षा नहीं है।**"

कीर्तिमान पर कीर्तिमान स्थापित कर नव इतिहास रच्यो,
नहीं समय पर हो पायो जो, इसड़ो कुण-सो काम बच्यो,
हो सुजना ! देख्या जो सपना सै होग्या साकार हो ।।

 तलवार से माथा काटने वाला दुश्मन जितना अहित नहीं करता, उतना अपना दुराचरण करता है।

• आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष-महासभा शताब्दी वर्ष सभा भवन निर्माण परियोजना

आचार्य श्री भिक्षु द्वारा संस्थापित तेरापंथ धर्मसंघ का विकास दिन-प्रतिदिन प्रवर्धमान हो रहा है। हम सौभाग्यशाली हैं कि तेरापंथ जैसे मर्यादित, अनुशासित व संगठित धर्मसंघ में हमें आध्यात्मिक विकास का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। आचार्य भिक्षु से लेकर वर्तमान आचार्य महाश्रमणजी ने विविध अवदानों के माध्यम से श्रमिक से लेकर राष्ट्रपति तक संपर्क स्थापित कर तेरापंथ धर्मसंघ को जन धर्म के रूप में प्रतिष्ठापित किया है। आज तेरापंथ धर्मसंघ के अवदान मानव मात्र के लिए प्रेरणादायक है। आध्यात्मिक गतिविधियों के सुसंचालन के लिए प्रत्येक सभा का अपना सभा भवन होना आवश्यक है। सामाजिक कार्यों की सम्पन्नता के लिए भी भवन की आवश्यकता को महसूस किया गया। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष व महासभा शताब्दी वर्ष में पूरे देश की यात्रा के दौरान आचार्यों के अवदानों को और अधिक स्थायित्व प्रदान करने के लिए तेरापंथ सभा भवन की उपयोगिता को आवश्यक माना गया। समाज व संघ की गतिविधियों की संपूर्ति के लिए आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष व महासभा शताब्दी वर्ष के स्वर्णिम अवसर पर जहां-जहां आवश्यकता है वहां सभा भवनों के निर्माण की महत्वपूर्ण योजना को प्रस्तावित किया गया। हमें पूरा विश्वास है कि अगर 100 सभा भवनों का निर्माण एक ही आकार में (प्रस्तावित तेरापंथ भवन नक्शानुसार) निर्मित होंगे तो यह वर्ष तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में अमिट हस्ताक्षर के रूप में हमेशा अमर रहेगा।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी - महासभा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में
तेरापंथ सभा भवन निर्माण के लिये स्वीकृत क्षेत्र

क्रमांक	सभा का नाम	स्थान	राज्य
1	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	विजयनगर	राजस्थान
2	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	पंजाब
3	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	[illegible]
4	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	नेपाल
5	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	राजस्थान
6	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	महाराष्ट्र
7	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	राजस्थान
8	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	राजस्थान
9	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	मध्य प्रदेश
10	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	उड़ीसा
11	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	पंजाब
12	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	कर्नाटक
13	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	कर्नाटक
14	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	उत्तर प्रदेश
15	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	उत्तर प्रदेश

क्रमांक	सभा का नाम	स्थान	राज्य
16	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	हरियाणा
17	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	मध्य प्रदेश
18	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	असम
19	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	पंजाब
20	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	राजस्थान
21	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	पश्चिम बंगाल
22	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	राजस्थान
23	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	महाराष्ट्र
24	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	मध्य प्रदेश
25	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	बिहार
26	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	महाराष्ट्र
27	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	मध्य प्रदेश
28	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	गुजरात
29	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	हरियाणा
30	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	[illegible]	हरियाणा

- विशेष ध्यातव्य है कि उपरोक्त स्वीकृत सभा भवनों में से उन्हीं सभाओं को महासभा व आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति द्वारा अनुदान प्रदान किया जायेगा जो सभायें आयकर विभाग में 80G या 12AA में पंजीकृत है। अतः सभी स्वीकृति प्राप्त सभाओं से निवेदन है कि अपना 'पंजीकरण प्रमाण पत्र' 'महासभा' कार्यालय में प्रेषित करें ताकि यथा शीघ्र 'अनुदान' जारी किया जा सके।

- गीत-संगीत परियोजना
- अणुव्रत अनुशास्ता तेरापंथ के नवमाधिशास्ता गुरुदेव तुलसी की जन्म शताब्दी वर्ष चल रहा है। इस वर्ष के उपलक्ष्य में अनेक योजनायें बनायी गयी, उनमें एक उपक्रम था गीतों का श्रेष्ठ, अच्छे गायकों के द्वारा संगान। गुरुदेव तुलसी के द्वारा रचित और गुरुदेव तुलसी के विषय में रचित अनेक-अनेक गीत विभिन्न गायकों द्वारा गाये गये हैं और गीतों में अपना माधुर्य होता है। अध्यात्म, भक्तिरस से परिपूरित गीत श्रोता को अध्यात्म की प्रेरणा देने वाला भी बन सकता है और संगायकों के मन में भी आध्यात्मिक संस्कार उत्पन्न कर सकता है तो ये गाये गये गीत श्रोता और संगायक दोनों के लिये आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाले बने।

शुभाशंसा - आचार्य महाश्रमण

आचार्य तुलसी का कवित्व कौशल अपने आप में अनुपमेय था। माधुर्य से लबरेज उनकी लेखनी में, उनकी गायकी में अद्भुत ओज, तेज एवं हेज का संदर्शन होता था, जो श्रोता को मंत्र मुग्ध कर अपनी प्रभावकता में बांध लेता था। भक्तिरस के साथ-साथ आचार्य तुलसी द्वारा रचित गीत पीढ़ी युवकों के साथ सुधार की संभावनाओं को हृदय आलोड़ित करते हुये परिवर्तन के संकल्प मुखर करने वाले थे।

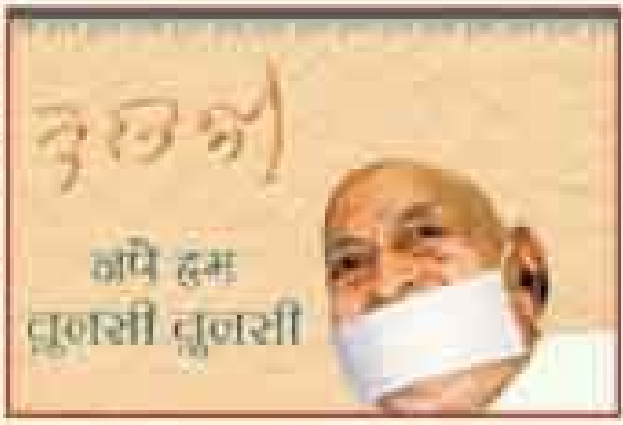

- शताब्दी वर्ष के ऐतिहासिक अवसर पर आचार्य तुलसी द्वारा रचित चंद चयनित औपदेशिक गीतों एवं उनकी स्तुति में आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमणजी एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी द्वारा रचित कुछ गीतों को प्रख्यात गायक गायकों के स्वर में संगीतबद्ध करने की महत्त्वपूर्ण परियोजना को पूर्ण रूप देने का सफल प्रयास किया गया है।
- इस परियोजना के संयोजक एवं प्रायोजक **श्रीमती सायर उमराव बैंगाणी, दिल्ली** हैं। आचार्य श्री महाश्रमणजी के मंगल आशीर्वाद से श्रीमती सायर उमराव बैंगाणी, दिल्ली का प्रयास निम्न क्रम सार्थक हुआ है।
- ज्ञातव्य है कि दिनांक 3 फरवरी 2014 को इस परियोजना के अंतर्गत तैयार संगीतबद्ध गीतों का विमोचन आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में किया जायेगा। गीत संगीत सूची इस प्रकार है-

	SONG	WRITER	SINGER
1.	SUGURU KO VANDAN SHAT SHAT BAR (SHTABDI SONG)	ACHARYA SHRI MAHASHRAMAN	SHAAN
2.	TULSI SWAMI RE, MANGAL NAAM TUMHARA	ACHARYA MAHAPRAGYA	SADHNA SARGAM
3.	GURUVAR TULSISHRI CHARNO MEIN	ACHARYA SHRI MAHASHRAMAN	JAVED ALI
4.	TERA PATHNAYAK TULSI	ACHARYA SHRI MAHASHRAMAN	VINOD RATHOD
5.	TULSI HAI PRANO SE PYARA	SADHVI PRAMUKHA KANAKPRABHA	KAVITA KRISHANMURTY
6.	JAI HAI JAI JEEVANDATA	ACHARYA TULSI	SOHAM CHAKRABATI
7.	SWAMMAY JEEVAN HO	ACHARYA TULSI	ALKA YAGNIK
8.	AEH DHARMIK VICHARO	ACHARYA TULSI	ANURADHA PAUDWAL
9.	ANUVRAT HAI SANSAR JAGANE KE LIYE	ACHARYA TULSI	KUMAR SHANU
10.	ARE DHARMIKO KIS PRAVAH MEIN	ACHARYA TULSI	UDIT NARAYAN
11.	JAPE HUM TULSI TULSI NAAM	SADHVI PRAMUKHA KANAKPRABHA	ASHA BHOSLE

* **ध्यान जागरण**

'गुरुदेव का दर्शन भी पाऊँ अन्तस जगाते रहना मैं' भक्ति की शक्ति असीम होती। भक्त उसमें अपने प्रभु का साक्षात्कार कर निहाल हो उठता है। ध्यान जागरण आत्मा को झंकृत करने का एक ऐसा ही प्रयास है, जिसके अन्तर्गत ... के समय दिनांक 5 नवम्बर 2013 को लाडनूं में रात्रि में ध्यान जागरण के रूप में तुलसी भक्ति संध्या का सफल आयोजन किया गया।

- ध्यान जागरण कार्यक्रम के संयोजक **श्री राकेश खटेड़, चैन्नई** है।

* **संस्कार चैनल पर प्रवचन प्रसारण - प्रति रविवार**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में संस्कार चैनल पर प्रति रविवार आचार्य तुलसी के चुनिंदा प्रवचनों का प्रसारण प्रातः 8-10 बजे से किया जा रहा है।

- कुल बावन प्रवचन प्रसारित किए जाने की परियोजना है, जो 25 अक्टूबर 2014 तक नियमित जारी रहेगी।
- **समणी सत्यप्रज्ञाजी व समणी रोहिणीप्रज्ञाजी** का अथक श्रम इन प्रवचनों के संपादन में नियोजित हुआ है।
- **श्री विमल सुराणा, दिल्ली** इसके संयोजकीय दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

* **कैलेण्डर**

महापुरुष के मुखारविन्द से निकले अमृत वचन हमारे जीवन के लिये दिशा सूचक का काम करते हैं। प्रतिदिन का यदि एक वचन भी आत्म चिंतन में आ जाये तो जीवन की सार्थकता की दिशायें उद्घाटित होने लगती हैं।

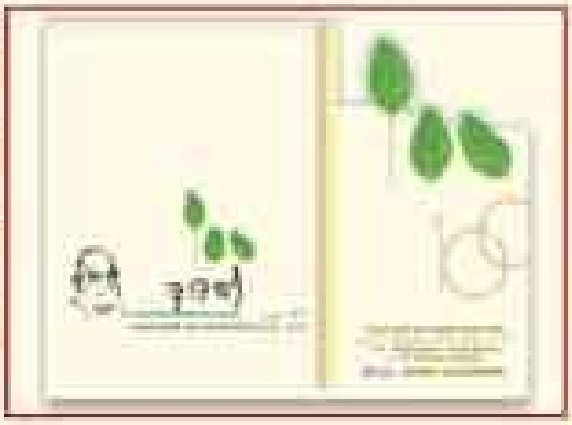

- इस लक्ष्य से "आचार्य तुलसी - अमृतवाणी" नाम से उनकी 35 प्रेरक शिक्षाओं को कैलेण्डर के रूप में संकलित कर प्रकाशित किया गया है।
- इसकी 55,000 प्रतियां तैयार की गई हैं। जिसकी एक-एक प्रति प्रत्येक तेरापंथी परिवार को निःशुल्क देने का प्रावधान है।
- महासभा कार्यालय से क्षेत्रीय आवश्यकतानुसार सभी सभाओं को कैलेण्डर की प्रतियां प्रेषित की जा चुकी हैं, जिसका अब तक का विवरण इस प्रकार है -

NAME OF PERSON	QTY.	DATE OF DER.	QTY.	DATE OF DER.	Qut.	DATE OF DAY	Qut.	DATE OF DEP	Qut.	PENDING Qut.
SRI [illegible] SINGH BARJLA	2000	5/6/2013	1500	27/6/13	500					0
SRI UTTAM CHAND NAHATA	1800	6/6/2013 GUJARATH SABHA	750	26/6/2013	250	15/9/2013	800	08/9/2013 GUJARATH SABHA	500	0
SRI NEMICHAND BAID	1200	12/7/2013	400	26/7/2013	800					0
SRI MADAN CHORARIA	128	12/7/2013	100							28
SRI [illegible]	1400	24/6/13	500	30/7/2013	900					0
SRI ANANDCHAND DUGAR	5000	AS PER LIST	4400							600
SRI [illegible]	4700	20/6/13	3000	26/8/2013	1700					0
SRI SUBHRAJ SETHIA	4000	12/7/2013	1000	1/8/2013	1000	17/3/13	2000	11/9/2013	1020	0
SRI VINOD BAINTHIA	10000	5/6/2013	1000	15/7/2013	1950	17/3/13	2000	14/9/2013	1050	4000
SRI MAHENDRA [illegible]	700	10/6/2013	700							0
SRI PUNAM CHAND [illegible]	1100	6/7/2013	1000	8/8/2013	100					0
SRI MOHAN LAL SINGH	300	10/8/2013	300							0
SRI [illegible] LAL JAIN	900	12/7/2013	500	4/8/2013	400					0
SRI GHASARAM JAIN	3000	25/6/13	1000	1/8/2013	1000					1000
SRI [illegible]	2000	20/6/13	1000	25/7/2013	1000					0
SRI [illegible] CHAND [illegible]	5000	15/7/13	1000	17/8/13	1000	10/9/2013	2000			1000
SRI [illegible]	300	10/8/2013	300							0
SRI [illegible]	1050	1/10/2013	800							250
SRI VINOD KACHHARA FORT SABHA - MUMBAI	3160	18/6/13	1500	1/8/2013	1000	17/3/13	500			1160

NAME OF PERSON	QTY.	DATE OF DEP.	QTY.	DATE OF DEP.	Qut.	DATE OF DEP.	Qut.	DATE OF DEP.	Qut.	PENDING Qut.
[illegible]	2700	5/3/2013 [illegible]	1300	5/6/2013 [illegible]	300	5/5/2013 [illegible]	200			0
[illegible]	5000	8/1/2014 17/8/2013 [illegible]	900	[illegible]	500	3/8/2013 27/8/2014	2000	28/8/2013	900	0
[illegible]	3000	29/6/13	1000	4/6/2013	1000	29/7/13	1000			0
[illegible]	3000	18/7/2013	1000	31.07.13 [illegible]	1000	31/3/2013 [illegible]	[illegible]			1000
[illegible]	4000	4/7/2013	1000	6/8/2013	1000	17/8/13	1000	[illegible]	1000	0
[illegible]	50	9/7/2013	50							0
[illegible]	50	19/7/2013	[illegible]							[illegible]
	12300									12300

- **कॉइन सोविनियर**

आचार्य श्री तुलसी के चित्रांकन सहित एक सिक्का 'शताब्दी वर्ष' की स्मृति स्वरूप प्रत्येक तेरापंथी परिवारों में पहुंचाने की परियोजना है।

- इस सिक्के के साथ ही आचार्य तुलसी जीवन चरित्र की संक्षिप्त प्रस्तुति हेतु Coin Souvenir का भी निर्माण किया जा रहा है। जिसे सिक्के के साथ ही परिवारों में प्रेषित किया जायेगा, जो प्रत्येक परिवार के लिये संग्रहणीय होगा।
- इस परियोजना के प्रायोजक **श्री बुद्धमल दुगड़ परिवार, कोलकाता** हैं।

- **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी : प्रचार-प्रसार**

वर्तमान युग में सफल योजनायें, सफल कार्य व सफल प्रचार-प्रसार का सुंदर सुयोग सफलता का आधार बन चुका है। इसलिये इस दिशा में अनुपूरक कार्य निर्धारित किये गये हैं। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में प्रचार-प्रसार हेतु चार डाक्यूमेंट्री फिल्मों का निर्माण किया गया है। शताब्दी वर्ष को विश्व व्यापकता देने के लिए www.acharyatulsi.in वेबसाइट निर्मित की गई है। फेसबुक पर https://www.facebook.com/acharyatulsibirthcentenary पेज भी बनाया गया है। समारोह से जुड़े हर छोटे बड़े कार्यक्रम (लाडनूं, मुम्बई, कोलकाता, बैंगलोर, बीदासर आदि) की जानकारियां, कार्यक्रम और फोटो आदि अपडेट किये गये और किये जा रहे हैं। देशभर में चल रही अणुव्रत संकल्प यात्रा से जुड़े कार्यक्रमों की जानकारियां और फोटो आदि को नियमित रूप से फेसबुक पेज पर अपडेट किया जाता है। लगभग 19,336 लोगों ने फेसबुक पेज को अब तक लाईक किया है (21 जनवरी 2014 के आंकड़े)। लाईक करने वालों में भारत देश के साथ-साथ विदेश में रहने वाले लोग भी शामिल हैं। व्हाट्स अप एप और आफिशियल यूट्यूब पेज पर भी समारोह से जुड़े फोटोज और डाक्यूमेंट्री आदि नियमित रूप से शेयर की जा रही है जिससे अध्यात्म एवं नैतिकता के साथ अहिंसा की गूंज और अधिक प्रखर हो रही है एवं अहिंसा के लिये किसी उदाहरण ... ने असाधारण काम किया है, इस पर अच्छी जन प्रतिक्रिया हमें प्राप्त हो रही हैं।

- सभी तेरापंथी सभाओं को शताब्दी लोगो सीडी, स्टीकर, संकल्प पत्र, होर्डिंग, बैनर, कैप, टी शर्ट, स्टीकर, कैलेण्डर्स आदि के डिज़ाइन की सीडी एवं उसका एक-एक सैम्पल प्रेषित किया गया है। इसके अतिरिक्त तेरापंथी सभाओं को प्रेषित की जाने वाली सामग्री इस प्रकार है - आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी प्रतीक चिन्ह, आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा रचित शताब्दी गीत, थीम, सन्देश, निर्धारित परियोजना का फोल्डर, चार वर्षों की जानकारी, साप्ताहिक कार्यक्रमों की सूची, करणीय कार्य, अणुव्रत संकल्प पत्र, आचार्य तुलसी द्वार, चौक, मार्ग का प्रारूप, आचार्य तुलसी का लगभग दस मिनट का प्रवचन एवं देश के शीर्षस्थ व्यक्तियों की समारोह में सहभागिता व सिक्कों का निर्माण आदि महत्वपूर्ण गतिविधियां प्रचार-प्रसार की दिशा में प्रभावी बनेंगी।

• शासकीय योजनायें

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर शासकीय कार्य योजनाओं का संयोजन महासभा के प्रधान न्यासी **श्री कमल कुमार दुगड़** कर रहे हैं और इस प्रयोजन हेतु वे देशभर के अनेक राजनेताओं, शिक्षाविदों, इतिहासकारों, समाज सुधारकों, साहित्यकारों, विचारकों एवं प्रबुद्ध व्यक्तियों से निरंतर संपर्क कर उन्हें आचार्य तुलसी के महान अवदानों से अवगत कराते हुये इस समारोह में उनकी सहभागिता सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस क्रम में निर्धारित कार्य योजनाओं का विवरण इस प्रकार है -

- **राष्ट्रपति भवन में आचार्य तुलसी के चित्र (भित्ति चित्र) का अनावरण** - आचार्य तुलसी की एक भित्ति चित्र राष्ट्रपति भवन में लगाये जाने हेतु राष्ट्रपति महोदय को अनुरोध पत्र दिया गया है।
- **आचार्य तुलसी या अणुव्रत के नाम से ट्रेन** - आचार्य तुलसी या अणुव्रत के नाम से ट्रेन की परिचालना के लिये भारत के रेलमंत्रियों के साथ यूपीए की चेयरपर्सन एवं कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी के साथ भी काफी पत्राचार हुआ है।
- **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी पर डाक टिकट** - सूचना प्रसारण मंत्री श्री कपिल सिब्बल को इस संबंध में एक विशेष निवेदित पत्र प्रेषित किया गया। इस संदर्भ में पोस्टमास्टर जनरल, पश्चिम बंगाल से हुई वार्तानुसार उन्होंने शीघ्र ही डाक टिकट जारी करने का आश्वासन दिया है। इस कार्य हेतु श्री महेन्द्र जाजड़, दिल्ली का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।
- **लोकसभा में अणुव्रत संगोष्ठी** - लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार से दिनांक / दिसम्बर 2012 को दिल्ली में व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर आचार्य तुलसी के अवदानों की जानकारी देते हुए, जुलाई से अक्टूबर 2014 के मध्य आचार्य श्री महाश्रमणजी का लोकसभा सदस्यों के बीच अणुव्रत पर एक विशेष वक्तव्य कराने का अनुरोध किया गया।
- **लोकसभा में आचार्य तुलसी के भित्ति चित्र का अनावरण** - लोकसभा अध्यक्ष से संपर्क के दौरान आचार्य तुलसी का आदमकद (पोर्ट्रेट) संसद भवन में स्थापित करने का निवेदन किया गया।
- **राज्यसभा में अणुव्रत संगोष्ठी** - माननीय उपराष्ट्रपति एवं राज्यसभा अध्यक्ष श्री हामिद अंसारी को पत्र के माध्यम से आचार्य तुलसी के अवदानों की जानकारी देते हुए, जब परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी 2014 में दिल्ली प्रवास पर होंगे, तब राज्यसभा में अणुव्रत पर एक संगोष्ठी रखाने का निवेदन किया गया है।
- **राज्यसभा में आचार्य तुलसी के भित्ति चित्र का अनावरण** - माननीय उपराष्ट्रपति एवं राज्यसभा अध्यक्ष श्री हामिद अंसारी को पत्र के माध्यम से आचार्य तुलसी के अवदानों की जानकारी देते हुए राज्यसभा में आचार्य तुलसी के भित्ति चित्र का अनावरण करने का निवेदन किया गया।
- **समस्त भारतवर्ष की विधानसभाओं में अणुव्रत संगोष्ठी** - भारत के समस्त राज्यों के विधानसभा के अध्यक्षों को पत्र के माध्यम से विधानसभा में आचार्य तुलसी के अवदानों की जानकारी देते हुए, विधानसभा में अणुव्रत पर एक संगोष्ठी रखने हेतु निवेदन किया गया है।
- **गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2014 पर अणुव्रत झांकी** - इस हेतु भारत के रक्षा मंत्री श्री ए. के. एंटनी एवं रक्षा राज्यमंत्री श्री जितेन्द्र सिंह से संपर्क कर 26 जनवरी 2014 को गणतंत्र दिवस की परेड पर अणुव्रत झांकी के प्रदर्शन हेतु निवेदन किया गया है।
- **शासकीय योजनाओं में तुलसी/अणुव्रत का नाम** - भारतवर्ष के समस्त राज्यों के मुख्यमंत्रियों को शासकीय योजना 'आचार्य तुलसी या 'अणुव्रत' के नाम से शुरू करने का अनुरोध पत्र दिया गया है।
  - भारतवर्ष के समस्त राज्यों के लगभग 4047 विधायकों को आचार्य तुलसी व अणुव्रत के नाम से शासकीय कार्य योजना हेतु पत्र/ई-मेल प्रेषित किये जाने की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है।
  - भारतवर्ष में कार्यरत लगभग 4300 आई.ए.एस. अफसरों को आचार्य तुलसी और अणुव्रत के नाम से शासकीय कार्य योजना हेतु पत्र/ई-मेल प्रेषित किये जाने की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है।
- **हवाई अड्डे का नामकरण** - भारत सरकार के नागरिक उड्डयन मंत्री श्री अजीत सिंह के साथ व्यक्तिगत मुलाकात कर उनसे निवेदन किया है कि बीकानेर जिले के नाल में निर्माणाधीन हवाई अड्डे का नाम 'आचार्य तुलसी एअरपोर्ट' किया जाये।
- **गुरुदेव तुलसी को राजकीय सम्मान** - व्यक्तित्व निर्माण, समाज सुधार, साम्प्रदायिक सौहार्द तथा राष्ट्रीय उत्थान की दृष्टि से आचार्य तुलसी के मौलिक चिंतन और उनके द्वारा प्रदत्त अवदानों के लिए गुरुदेव तुलसी को राजकीय सम्मान दिये जाने हेतु यूपीए चेयरपर्सन श्रीमती सोनिया गांधी को पत्र प्रेषित किया गया है।
- **संरक्षक समिति का निर्धारण** - आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के संरक्षक मंडल (पैट्रन मेम्बर) बनाने हेतु राजनेताओं, कलाकारों, शिक्षाविदों, राज्यपालों, शासकीय अधिकारीगण, पत्रकारों आदि को निवेदन पत्र भेजे गये हैं। उनमें से लगभग 25 महानुभावों की स्वीकृति प्राप्त हुई है।

- **भारत एवं अन्य राष्ट्रों के विश्वविद्यालयों को आज की शिक्षा पद्धति में अणुव्रत की आवश्यकता हेतु पत्राचार** – आज की शिक्षा जगत को वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति के साथ-साथ अणुव्रत, नैतिकता, अहिंसा, विश्व शांति के संदर्भ में सेमिनार/कॉन्फ्रेंस इत्यादि रखने हेतु विश्व के जाने-माने विश्वविद्यालयों से पत्राचार किया जा रहा है।
- **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह को न्यूज चैनलों में प्रसारण हेतु पत्राचार** – देश के लगभग सभी न्यूज चैनलों को आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के चार चरण के प्रसारण हेतु पत्र प्रेषित किये गये हैं।
- **राष्ट्रपति भवन में आचार्य महाश्रमण व राष्ट्रपति से भेंट** – राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी से आचार्य श्री महाश्रमणजी से भेंट हेतु पत्राचार।

★ **काव्य संध्या का आयोजन**

काव्य एक ऐसी विधा है जिसमें प्रस्तुत भावनायें दिल की गहराई से छू लेती हैं। शायद इसीलिये भक्तिरस में डूबने के लिये, अपने आराध्य से तादात्म्यता बिठाने के लिये भावों की गहराई को शब्दों के जादू में प्रस्तुति का काव्यमयी अंदाज सबको बेहद भाता है इस निमित्त से 2 फरवरी 2014 को सायंकाल गंगाशहर में पुण्यस्थल की सन्निधि में विशाल स्तर पर काव्य संध्या का आयोजन किया जा रहा है व इस काव्य संध्या में कवि श्री सुरेन्द्र दुबे, डॉ. कीर्ति काले, श्री अब्दुल गफ्फार, श्री कैलाश मण्डेला व श्री आलोक बेजान जैसे प्रसिद्ध कवि भाग ले रहे हैं।

- कार्यक्रम के संयोजक-प्रायोजक **श्री प्रसन्नचन्द भंडारी, हैदराबाद** हैं।

★ **प्रश्नावली**

इस प्रकल्प के अंतर्गत आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर पूरे देश में प्रश्नमंच आयोजित करने के लक्ष्य से 1100 प्रश्न तैयार किये गये हैं जिनमें से 1000 प्रश्नों का चयन कर पुस्तिका का निर्माण कर सभी संलग्न तेरापंथी सभाओं को प्रेषित करने का प्रावधान है। यह प्रश्नावली श्री भूपेन्द्र कुमार मुथा के निर्देशन में तैयार हुई है। इस प्रकल्प के संयोजक **श्री भूपेन्द्र कुमार मुथा** हैं एवं प्रायोजक **श्री दशरथमल भंडारी, जोधपुर** हैं।

आगम सम्पादन री अभिनव मिली प्रेरणा मंथर में, वीर जयंती रै अवसर घोषित निर्णय ऊंचे स्वर में,
हो सुजना ! पायो जैनागम वैज्ञानिक आधार हो ।।

* तीन नियम - संकल्प पत्र
* **प्रभु बनकर ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं**

आचार्य तुलसी द्वारा रचित अनेक पंक्तियां आज स्वयं अपने सृजनकर्ता की अभ्यर्थना में बार-बार मुखर होने को आतुर हैं। ... अनुपम संयम के धारक आराधक-साधक, कालजयी शताब्दी महापुरुष का अभिषेक संयम के बहुमूल्य रत्नों से करते हुए हम सब आत्म कल्याण के मार्ग पर प्रयास करें।

परम उपकारी हमारे गुरु आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा प्रदत्त मात्र तीन नियमों को स्वीकार करने का आवाहन समिति द्वारा किया जा रहा है उन्हें स्वीकार कर हम सब आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के इस महायज्ञ में अपने कर्मों की आहुति देकर संयम की ज्योति को प्रज्वलित कर सकते हैं।

तीन नियम

परमपूज्य आचार्यप्रवर!

सविधि वंदना!

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के संदर्भ में आपश्री द्वारा प्रदत्त परामर्शों को मैं अपने आत्मकल्याण हेतु एक वर्ष के लिए सहर्ष स्वीकार करता हूँ/करती हूँ।

1. नियमित अथवा निश्चित रात्रिभोजन का परिहार। ( )
2. झूठ बोलने से बचना, कदाचित् इस संदर्भ में स्खलना हो जाए, झूठ बोलना पड़ जाए तो एक दिन बोले गये झूठ के परिशोधन के लिए एक उपवास करना। ( )
3. एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य/शीलव्रत की साधना का प्रयोग। ( )

स्वीकारकर्ता : ....

स्थान : ....

संपर्क सूत्र : ....

* जन जागरण व समर्पण यात्राएँ

आचार्य तुलसी तेरापंथ के ही नहीं जनजन के मसीहा थे। उनके चिंतन की उपयोगिता आज भी समाज के प्रत्येक वर्ग में स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी जन्म शताब्दी के इस अवसर पर जन जन मन में श्रद्धार्पण करने हेतु जन जागरण व समर्पण यात्राओं का आयोजन किया गया जिससे पूरे देश में 'तुलसी नाम की लहर' एकबार फिर तेज हो उठी फलस्वरूप तुलसी के लिये कुछ कर गुजरने के संकल्प की अहसास में कृतज्ञ जन से जुड़ा हर व्यक्ति अपनी शक्ति नियोजित करने हेतु तत्पर हो उठा।

* ये यात्राएँ आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के संयोजक श्री हीरालाल मालू के नेतृत्व में पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा की गई जिनका अभूतपूर्व प्रभाव उल्लेखनीय है।
* ध्यातव्य है कि अब तक 306 क्षेत्रों की यात्राएं हो चुकी हैं जिनके अंतर्गत निम्नांकित राज्यों का विवरण समाहित है - महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, हरियाणा, उड़ीसा, असम, आन्ध्र प्रदेश, नेपाल, मध्य प्रदेश, पंजाब, मेघालय, भूटान, त्रिपुरा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार।

★ उपलब्धियां जिन्होंने हमें गौरवान्वित किया

★ भारत सरकार द्वारा आचार्य तुलसी के चित्र युक्त सिक्के जारी करने की सहमति

आचार्य तुलसी जैसे महान युग चिंतक को सम्मान करते हुये भारत सरकार द्वारा आचार्य तुलसी के चित्र से युक्त 5 व 20 रुपये के सिक्के जारी करने की लिखित सहमति प्रकट की गयी है जो तेरापंथ समाज के लिये अतिशय गौरव का विषय है। भारतीय टकसाल मुम्बई में 5 रुपये के 'सर्क्युलेशन कोइन' तथा 20 रुपये के 'नॉन सर्क्युलेशन कोइन' का निर्माण कार्य जारी है।

- इस कार्य संपादन में **श्री हंसराज डागा, गंगाशहर** का निष्ठापूर्ण श्रम योगभूत बना है।
- लिखित में प्राप्त The Gazette Of India के कुछ महत्वपूर्ण अंश इस प्रकार हैं -

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 दिसम्बर 2013

सा.का.नि. 782 (अ). - केन्द्रीय सरकार, सिक्का-निर्माण अधिनियम, 2011 (2011 का 11) की धारा 24 की उप-धारा (2) के खंड (च) और खंड (छ) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ :- (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम **''आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी''** के अवसर पर स्मरणोत्सव मनाने के लिये बीस रुपये और पांच रुपये के सिक्कों का निर्माण नियम, 2013 है।

(2) ये राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. (1) **''आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी''** के अवसर पर स्मरणोत्सव मनाने के लिये केन्द्रीय सरकार के प्राधिकार के अधीन जारी करने के लिए टकसाल में निम्नलिखित अंकित मूल्य के सिक्कों का निर्माण किया जायेगा, अर्थात् :-

(क) बीस रुपये

(ख) पांच रुपये

- **डिजाईन**

1. **बीस रुपये**

अग्र भाग

सिक्के के मुख भाग पर मध्य में अशोक स्तम्भ का सिंह शीर्ष होगा, जिसके नीचे **''सत्यमेव जयते''** मुद्रा-लेख उत्कीर्ण होगा, इसकी बांयी परिधि पर देवनागरी लिपि में **''भारत''** शब्द और दाहिनी परिधि पर अंग्रेजी में **"INDIA"** शब्द होगा। इस पर सिंह शीर्ष के नीचे रुपये का प्रतीक ''₹'' और अन्तर्राष्ट्रीय अंकों में अंकित मूल्य ''20'' भी होगा।

पृष्ठ भाग

सिक्के के मुख भाग पर ऊपरी बांयी परिधि पर देवनागरी लिपि में उत्कीर्ण ''आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी'' और निचली परिधि पर अंग्रेजी में **"ACHARYA TULSI BIRTH CENTENARY"** सहित मध्य में ''आचार्य तुलसी'' का चित्र होगा। ''आचार्य तुलसी चित्र के नीचे वर्ष ''1914-2013'' उत्कीर्ण होंगे।

2. **पांच रुपये**

अग्र भाग

सिक्के के मुख भाग पर मध्य में अशोक स्तम्भ का सिंह शीर्ष होगा, जिसके नीचे **''सत्यमेव जयते''** मुद्रा-लेख उत्कीर्ण होगा, उसकी बांयी परिधि पर बाहर में देवनागरी लिपि में **''भारत''** शब्द और दाहिनी परिधि पर बाहर में अंग्रेजी में **"INDIA"** शब्द होगा। इस पर सिंह शीर्ष के नीचे रुपये का प्रतीक ''₹'' और अन्तर्राष्ट्रीय अंकों में अंकित मूल्य ''5'' भी होगा।

पृष्ठ भाग

सिक्के के मुख भाग पर ऊपरी परिधि पर देवनागरी लिपि में उत्कीर्ण ''आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी'' और निचली परिधि पर अंग्रेजी में "ACHARYA TULSI BIRTH CENTENARY" मध्य में ''आचार्य तुलसी'' का चित्र होगा। ''आचार्य तुलसी चित्र के नीचे वर्ष ''1914-2013'' उत्कीर्ण होंगे।

- **बोन मेरो ट्रांसप्लांट यूनिट स्थापना परियोजना**

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष पर कैंसर जैसे भयावह रोग के उपचार हित एक और बड़ा कार्य आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह व राजस्थान सरकार के संयुक्त प्रयास से पूर्ण रूप ले रहा है।

- आचार्य तुलसी क्षेत्रीय कैंसर उपचार एवं अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में 'बोन मेरो ट्रांसप्लांट यूनिट' स्थापित करने के लिये' आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समिति द्वारा 1.25 करोड़ रुपये की सहयोग राशि प्रदान की जा रही है।
- विशेष उल्लेखनीय है इस यूनिट हेतु 12,000 वर्ग फुट भूमि आवंटन एवं यूनिट हेतु नई बिल्डिंग निर्माण की सहमति राजस्थान सरकार द्वारा प्रदान कर दी गई है।
- समिति के इस प्रयास से राजस्थान व बीकानेर संभाग तथा आस-पास के प्रदेशों में बड़ी संख्या में कैंसर रोग पीड़ित मरीजों के उपचार हेतु विशेष कार्य कारगर हो पायेगा।
- यह सम्पूर्ण कार्य **आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान** की देखरेख व उनके सहयोग से सम्पादित हो रहा है। इस सार्थक प्रयास हेतु सभी अधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

- **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में हरियाणा सरकार द्वारा हरियाणा राज्य स्तरीय कार्यक्रम की समायोजना।**
  - 8 दिसम्बर 2013 को टैगोर थियेटर, चण्डीगढ़ में राज्यस्तरीय कार्यक्रम हरियाणा सरकार द्वारा समायोजित किया गया।
  - आमंत्रण पत्र भी आचार्य श्री तुलसी के चित्र के साथ हरियाणा सरकार द्वारा प्रेषित किया गया।

- हरियाणा सरकार की मासिक पत्रिका ''संवाद'' का विशेषांक हरियाणा सरकार द्वारा प्रकाशित हुआ।

- हरियाणा राज्य से प्रकाशित होने वाले सभी समाचार पत्रों में प्रमुखता से समारोह का विज्ञापन भी हरियाणा सरकार द्वारा दिये गये।

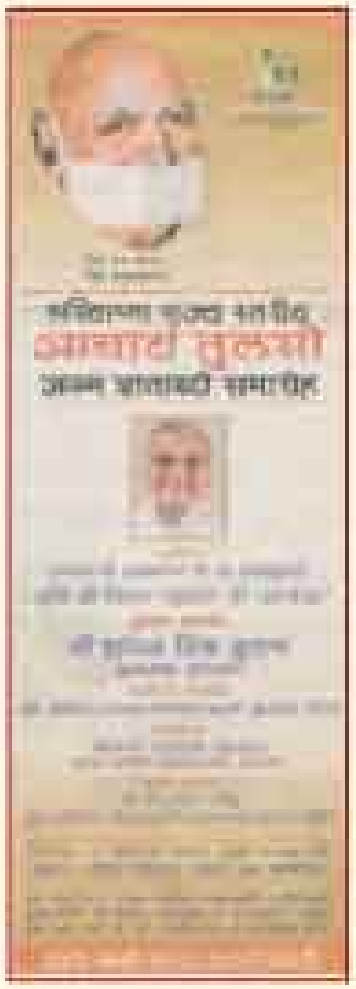

- हरियाणा राज्य स्तरीय कार्यक्रम की समाचार सभी पत्र - पत्रिकाओं ने मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित किया।

चंडीगढ़ सवेरा टाइम्स

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष पर उमड़ा जनसैलाब

- चण्डीगढ़ के मुख्य-मुख्य चौराहों पर बहुत बड़े-बड़े होर्डिंग्स जिसमें आचार्य तुलसी का चित्र था हरियाणा सरकार द्वारा लगाये गये।
- हरियाणा की प्रत्येक विद्यालय, महाविद्यालय व धार्मिक स्थानों में अणुव्रत पट्ट लगाने की घोषणा की गई व उसका कार्य भी प्रारम्भ हो गया।
- तुलसी चौक के निर्माण की घोषणा हरियाणा सरकार द्वारा की गई।
- हरियाणा के किसी एक राजमार्ग का नाम रखने की स्वीकृति हरियाणा सरकार द्वारा की गई।
- मुनिश्री विनयकुमारजी स्वामी के सान्निध्य में समायोजित कार्यक्रम में हरियाणा मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा मुख्य अतिथि, श्री ओंकारानन्द शंकराचार्य प्रयाग पीठ विशिष्ट अतिथि, श्रीमती सावित्री जिंदल शहरी स्थानीय निकाय मंत्री की अध्यक्षता व श्री हीरालाल मालू मुख्य संयोजक आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित हुये।
- हरियाणा राज्य स्तरीय सम्मेलन में अनेक राजनेता, समाजसेवी, साहित्यकार, बुद्धिजीवी, शिक्षाविद्, ख्याति प्राप्त कलाकार, पत्रकार एवं सभी धर्मों के लोग विशेष रूप से उपस्थित थे।

19 फरवरी 2014 को पंजाब सरकार द्वारा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह, चण्डीगढ़ में आयोजित किया जायेगा एवं पंजाब सरकार द्वारा सरकारी तथा प्राईवेट स्कूलों में अणुव्रत आचार संहिता पट्ट लगाने के महत्वपूर्ण निर्णय की घोषणा की गयी।

* **विशेष ध्यातव्य**

1. आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में गुरुकुलवास में समायोजित होने वाले कार्यक्रम आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह समिति द्वारा आयोजित होंगे।
2. आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में निर्धारित उपक्रम के अतिरिक्त कोई भी केन्द्रीय संस्था यदि कोई उपक्रम करना चाहे तो उसकी विधा इस प्रकार रहेगी
   1. आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति से पूर्व स्वीकृति आवश्यक होगी।
   2. यह कार्य समारोह समिति के अन्तर्गत ही किया जा सकेगा तथा उपक्रम के बैनर आदि में उस केन्द्रीय संस्था का उल्लेख नहीं होगा।
   3. उपक्रम हेतु संसाधन जुटाने का दायित्व उस केन्द्रीय संस्था का रहेगा।
3. दिल्ली में आचार्यश्री के चातुर्मास प्रवास के दौरान प्रत्येक माह में दो अथवा तीन अणुव्रत विचार संगोष्ठियां आयोजित करने की परिकल्पना की गई है।
4. द्वितीय चरण के अवसर पर 2 फरवरी 2014 को गंगाशहर में समायोज्य सायंकालीन कार्यक्रम "काव्य संध्या" के रूप में निर्धारित किया गया है।
5. शताब्दी वर्ष के संदर्भ में स्थानीय स्तर पर समायोज्य चार चरणों के कार्यक्रम का दायित्व स्थानीय तेरापंथी सभा का रहेगा।
6. आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में शताब्दी के संदर्भ में स्थानीय स्तर पर चार चरणों के कार्यक्रमों के अतिरिक्त तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत समिति आदि तेरापंथ समाज से जुड़ी हुई अकेन्द्रीय संस्थायें कोई कार्यक्रम आयोजित करना चाहें तो अपनी केन्द्रीय संस्था तथा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति से पूर्व स्वीकृति प्राप्त करना अपेक्षित रहेगा।
7. स्थानीय स्तर पर आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में समायोजित होने वाले कार्यक्रमों के कार्ड, पोस्टर, बैनर आदि में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह का उल्लेख व प्रतीकचिन्ह (लोगो) रहे। अन्य कोई प्रतीक चिन्ह उसमें न हो।
8. आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी तथा रिपोर्ट प्रेषित करने हेतु पता और सम्पर्क-सूत्र इस प्रकार है-

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002

ई-मेल : mail@acharyatulsi.in, +91 9654000054, 9654000055

श्रद्धावनत्

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

• आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह संयोजना - निर्धारित परियोजना

- तेरापंथ धर्मसंघ में १३० मुनि दीक्षाएं।
- आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा प्रदत्त शताब्दी संदेश, गीत व थीम की ऑडियो सीडी का निर्माण व प्रसार।
- प्रतीक चिह्न का निर्माण।
- प्रतीक चिह्न का राष्ट्रपति द्वारा उद्घाटन।
- कार्यक्रमों की व्यवस्थित जानकारी हेतु फोल्डर का निर्माण।
- अणुव्रती बनाने का राष्ट्रव्यापी अभियान।
- अणुव्रत संकल्प पत्र का निर्माण (विभिन्न भाषाओं में)।
- अणुव्रत के संदर्भ में मासिक संगोष्ठी का आयोजन।
- अणुव्रत पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।
- अणुव्रत रैलियों का आयोजन।
- राष्ट्रव्यापी अणुव्रत संकल्प यात्रा।
- अणुव्रत संकल्प यात्रा हेतु अत्याधुनिक रथों का निर्माण।
- विद्यालयों में अणुव्रत नियमावली का आलेखन (अणुव्रत पट्ट)।
- व्यावसायिक अणुव्रत पट्ट।
- स्टीकर का निर्माण।
- टी-शर्ट का निर्माण
- इलेक्ट्रॉनिक्स का निर्माण।
- बैनर, होर्डिंग व न्यूज पेपर हेतु विज्ञापन की डिजाईन प्रारूप का निर्धारण।
- अणुव्रत चौक स्तम्भ का निर्माण।
- अणुव्रत प्रश्नोत्तरी का निर्माण।
- विराट अभिनव सामायिक का आयोजन।
- आचार्य तुलसी के सम्पूर्ण साहित्य का तुलसी वाङ्मय के रूप में व्यवस्थित प्रकाशन।
- आचार्य तुलसी की चयनित कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद।
- आचार्य तुलसी स्मृति ग्रन्थ का निर्माण।
- आचार्य तुलसी जीवन वृत्त का लेखन।
- तुलसी महाकाव्यम् का सम्पादन।
- आचार्य तुलसी पर एनिमेशन फिल्म।
- आचार्य तुलसी की ऐतिहासिक तिथी की दीर्घा।
- आचार्य तुलसी प्रमाणिक संकलन।
- विभिन्न नगरों में आचार्य तुलसी चौक, आचार्य तुलसी द्वार और आचार्य तुलसी मार्ग नामकरण।
- आचार्य तुलसी की जन्मभूमि लाडनूं में आचार्य तुलसी नागद्वार का निर्माण।
- विद्यालयों में अणुव्रत परीक्षाओं का उपक्रम।
- अनेक नगरों में तेरापंथ भवनों का निर्माण।
- गीत-संगीत परियोजना।
- स्वच्छ जागरण।
- संस्कार चैनल पर तुलसी उपलब्ध वाणी का प्रसारण (प्रति रविवार)।
- कैलेण्डर का निर्माण।
- कॉर्पोरेट सोविनियर का निर्माण।
- आचार्य तुलसी प्रचार-प्रसार के लिए मौलिक प्रकल्पन।
- जन्म शताब्दी के संदर्भ में अनेकानेक शासकीय योजनाओं का क्रियान्वयन।
- कलश संस्था का आयोजन।
- आचार्य तुलसी जीवनवृत्त प्रश्नावली का निर्माण।
- तीन दिवसीय संकल्प पत्रों का निर्माण।
- जन जागरण व सामूहिक यात्राएँ
- भारत सरकार द्वारा आचार्य तुलसी के चित्र युक्त सिक्के जारी करने की योजना।
- जैन विश्व भारती में आचार्य तुलसी स्मारक परियोजना।
- व्यक्तित्व निर्माण प्रकल्प परिषद् बैठकों का संचालन।
- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति का गठन।
- जन्म शताब्दी चार चरणों में समायोजित करने का निर्धारण।
- वृहद् दीक्षा महोत्सव बीदासर 'महाश्रमण' समायोजना।
- संरक्षक, परामर्शक, कार्य समिति एवं स्वागत समिति का निर्धारण।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
Jain Swetambar Terapanthi Mahasabha
(ISO 9001 : 2008 Certified Organisation)
3, Portuguese Church Street, Kolkata - 700 001.
Phone : 033-22357956, 22343898, Fax : 033-22343868, e-mail : info@jainmahasabha.org

President's Office :
C/o. Maloo [illegible], 2nd Floor, [illegible], Brigade [illegible], Gandhinagar, Bangalore - 560 009
Phone : 080-2220 5731, Fax : 080-2226 4530, e-mail : hiralal.maloo@gmail.com